Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जपुजी सटीक

वि० - ४६

१ ओं

शकल बिना एक मालिक है,

सतिनामु करता पुरखु

सच्चे नाम वाला, सब का कार्क,

निरभउ निरवैरु

निडर वैर से रहत,

अकालमूरति

मृत्यु से रहत मूर्ति,

अजूनी

जन्म से रहत,

सैभं

आप ही आप से जन्मा है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुर प्रसादि ॥

गुरु कृपा से मिलता है।

जपु ॥

ऐसे वाहेगुरु को जपो।

आदि सचु

पहले भी सच्चा,

जुगादि सचु

युगों से पहले भी सच्चा,

हैभी सचु

अब भी सच्चा,

नानक होसी भी सचु ॥

और आगे भी सदा सच्चा होगा,

सोचै सोचि न होवई

सोचने से नहीं मिलता,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो सोची लखवार ॥
चाहे लाखों बार सोचिये ।
चुपै चुपि न होवई
चुप नहीं हो सकदी
जे लाइ रहा लिवतार ॥
चाहे कितनी चुप साधिये ।
भुखिआ भुख न उतरी
भूखों की भूख नहीं उतरती
जे बंना पुरीआ भार ॥
चाहे शहरों का बोझ बांध दें ।
सहस सिआणपा लख होहि
सैंकड़ों चतुराईयां हों
त इक न चलै नालि ॥
किन्तु एक भी साथ नहीं जाती ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किव सचिआरा होईऐ

कैसे सच्चे हों और

किव कूड़ै तुटै पालि ॥

बीच में से झूठ की हद टूट जाये ।

हुकमि रजाई चलणा

आज्ञा में चलें और

नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

उस को साथ समझें ।

हुकमी होवनि आकार

हुकम में सब अकार होते हैं

हुकमु न कहिआ जाई ॥

उस का हुकम कहा नहीं जाता ।

हुकमी होवनि जीअ

हुकम में जीव होते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुकमि मिलै वडिआई ॥

हुकम से बड़ाई मिलती है।

हुकमी उतमु नीचु

हुकम में अच्छे बुरों को

हुकमिलिखि दुखसुख पाईअहि ॥

दुःख सुख में पाया जाता है।

इकना हुकमी बखसीस

किसी को हुकम में बख्सीस

इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

किसी को सदा भ्रमण।

हुकमै अंदरि सभु को

हुकम में सब कोई है,

बाहरि हुकम न कोइ ॥

हुकम से बाहर कोई नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक हुकमैं जे बुझै

जो हुकम को समझे.

त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

वह अहंकार नहीं करता।

गावै को ताणु

तब उसे कोई गाये

होवै किसै ताणु ॥

यदि किसी में शक्ति हो।

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

उस की देन को कौन जान सकता है।

गावै को गुण वडिआईआ चार

कोई उस की बड़ाई और गुण गाता है।

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

कोई उसकी कठिन विद्या को गाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

शरीर बना कर मिट्टी करता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

फिर जीव देह ले लेता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

निकट और दूर भी दीखता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

निकट से निकट देखता है कोई ऐसा गाता है।

कथना कथी न आवै तोटि ॥

उसके गुणों की कथाओं को घाटा नहीं पड़ता।

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

करोड़ां २ कह २ कर थक गये।

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

वह देने वाला देता रहा लेने वाले थक गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक हुकमै जे बुझै

जो हुकम को समझे,

त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

वह अहंकार नहीं करता।

गावै को ताणु

तब उसे कोई गाये

होवै किसै ताणु ॥

यदि किसी में शक्ति हो।

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

उस की देन को कौन जान सकता है।

गावै को गुण वडिआईआ चार

कोई उस की बड़ाई और गुण गाता है।

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

कोई उसकी कठिन विद्या को गाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

शरीर बना कर मिट्टी करता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

फिर जीव देह ले लेता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

निकट और दूर भी दीखता है कोई ऐसा गाता है।

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

निकट से निकट देखता है कोई ऐसा गाता है।

कथना कथी न आवै तोटि ॥

उसके गुणों की कथाओं को घाटा नहीं पड़ता।

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

करोड़ां २ कह २ कर थक गये।

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

वह देने वाला देता रहा लेने वाले थक गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

युगों युगों में पदार्थ खाते आये ।

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥

मालिक हुकम में मार्ग चलाता है ।

नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

वह वेपरवाह प्रसन्न होता है ।

साचा साहिबु साचु नाइ

मालिक सच्चा है नाम भी सच्चा है,

भाखिआ भाउ अपारु ॥

उसका बड़ा प्रेम कहा नहीं जाता ।

आखहि मंगहि देहि देहि

लोग कहते और मांगते हैं वह देता है

दाति करे दातारु ॥

वह दाता दातां (देन) करदा है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फेरि कि अगै रखीऐ

हम उस के आगे क्या रक्खें,

जितु दिसै दरबारु ॥

जिस से उस का दरबार दीख पड़े।

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ

मुख से कौन से बोल (शब्द) बोलें,

जितु सुणि धरे पिआरु ॥

जिस से वह हम से प्रेम करे।

अंमृत वेला सचु नाउ

प्रातः उठ कर सच्चे नाम से

वडिआई वीचारु ॥

बड़ाई (कीर्ति) का विचार करें।

करमी आवै कपड़ा

यह देह कपड़ा कृपासे मिलता है और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नदरी मोखु दुआरु ॥

कृपा द्वारा ही खुला द्वार मिलेगा।

नानक एवै जाणीऐ

उसको ही जानें कि

सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥

वह आप ही सच्चा है।

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

वह किसी का निश्चित् और बनाया हुआ नहीं।

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥

वह माया के बिना आप ही आप है।

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥

जिस ने उस की सेवा की आदर पाया है।

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

उस गुणों के खजाने को गायें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥

गायें, सुनें और मन में प्रेम रक्खें।

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥

दुःखों को दूर फैंक कर सुख घर में ले जायें।

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं

गुरु ही शब्द है गुरु ही वेद है

गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु के साथ परमात्मा मिला हुआ है।

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा

हमें तो शिवजी, विष्णु, ब्रह्मा की जगह गुरु ही गुरु है

गुरु पारबती माई ॥

और माता पार्वती के स्थान पर भी गुरु ही है।

जे हउ जाणा आखा नाही

गुरु बिना यदि मैं किसी अन्य को जानूं तो कहदूं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहणा कथनु न जाई ॥

उस का न कथन होता न कहा जाता है।

गुरा इक देहि बुझाई ॥

गुरु ने एक बात समझा दी है।

सभना जीआ का इकु दाता

जो सब जीवों का एक दाता है

सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

वह मुझे नहीं भूलता है।

तीरथि नावा जे तिसु भावा

मैं तीर्थों पर स्नान तब करूं जो उसे अच्छा लगूं।

विणु भाणे कि नाइ करी ॥

नहीं तो स्नान करके क्या करूं।

जेती सिरठि उपाई वेखा

जितना जगत देखता हूं उसका पैदा किया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विणु करमा कि मिलै लई ॥

मेरे बिना न किसी को कुछ मिलता है न ले सकता है।

मति विचि रतन जवाहर माणिक

जो बुद्धि में रत्न जवाहर माणक हैं

जे इक गुर की सिख सुणी ॥

यह एक गुरु की शिक्षा है।

गुरा इक देहि बुझाई ॥

गुरुओं ने मुझे एक बात समझा दी है।

सभना जीआ का इकु दाता

जो सब जीवों का एक दाता है

सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥

वह मुझे नहीं भूलता है।

जे जुग चारे आरजा

चाहे चार युग आयु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होर दसूणी होइ ॥

और इस से अधिक दस गुणा और हो जाये ।

नवा खंडा विचि जाणीऐ

पृथ्वी के नव खण्डों में जीव जानिया जाये

नालि चलै सभु कोइ ॥

और हर कोई उस के साथ चल पड़े ।

चंगा नाउ रखाइकै

अच्छा नाम रखा कर

जसु कीरति जगि लेइ ॥

यश कीर्ति भी ले लेवे ।

जे तिसु नदरि न आवई

यदि उसे नज़र नहीं आता यदि उसकी कृपा नहीं

त वात न पुछै के ॥

तो उस जीव की कोई बात भी नहीं पूछता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कीटा अंदरि कीटु करि

मालिक उसे कीड़ियों का कीड़ा बना देता है

दोसी दोसु धरे ॥

दोशी भी उस में दोश रखते हैं।

नानक निरगुणि गुणु करे

मालिक ही निरगुणों पर गुण करता है

गुणवंतिआ गुणु दे ॥

और गुणवानों को और गुण देता है।

तेहा कोइ न सुझई

मुझे ऐसा और कोई नहीं दीखता है।

जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७ ॥

मालिक के ऊपर भी जोई कृपा कर सकता हो।

सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ ॥

गुरु उपदेश सुनकर सिद्ध, पीर, देवते, योगी बन गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुणिऐ धरति धवल आकास ॥

आकाश पाताल धरती प्रकाश सबमें गुरु उपदेश है।

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥

द्वीपों लोकों पातालों में गुरु उपदेश है।

सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥

गुरु उपदेश सुनने से मृत्यु नहीं पकड़ती।

नानक भगता सदा विगासु ॥

भक्तों को गुरु उपदेश से सदा प्रसन्नता हैं।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥

दुखों पापों का गुरु उपदेश द्वारा ही नाश होता है।

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥

ब्रह्मा, विष्णु और शिव ने भी उपदेश सुना।

सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥

गुरु उपदेश से तुच्छ भी सराहनीय हो गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
उपदेश से योग युक्ति और शरीर का भेद लगता है।

सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥
उपदेश से शास्त्र और स्मृति की सूझ होती है।

नानक भगता सदा विगासु ॥
भक्तों को गुरु उपदेश से प्रसन्नता है।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥६॥
दुःखों पापों का गुरुउपदेश द्वारा ही नाश होता है।

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
उपदेश से सच्चा सन्तोषी और ज्ञानी होता है।

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
तीर्थों स्नान से गुरू उपदेश उत्तम है।

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
गुरु उपदेश को सुन पढ़ कर आदर पाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥

गुरु उपदेश से सुगम ही ध्यान लग जाता है।

नानक भगता सदा विगासु ॥

भक्तों को गुरु उपदेश से सदा खुशी है।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

दुःखों पापों का गुरु उपदेश से ही नाश होता है।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥

गुरु उपदेश से बेअन्त गुणों का समुद्र बनता है।

सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥

गुरु उपदेश से शेख पीर बादशाह बन जाता है।

सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥

गुरु उपदेश से अन्धों को मार्ग दीखता है।

सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥

गुरु उपदेश से कठिन कार्य सुगम हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक भगता सदा विगासु ॥

भक्तों को गुरु उपदेश से सदा खुशी है।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

दुःखों पापों का गुरु उपदेश से ही नाश होता है।

मंने की गति कही न जाइ ॥

गुरु वचनों की बड़ाई नहीं की जाती।

जे को कहै पिछै पछुताइ ॥

जो गुरु वचनों से उलट कहता है पछताता है।

कागदि कलम न लिखणहारु ॥

वचनों की उपमा कागज कलम से लिखने वाली नहीं

मंने का बहि करनि वीचारु ॥

गुरु वचनों का फल एक बार बैठ कर विचारो।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

माया रहत मालिक का नाम इस प्रकार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जेको मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

जो गुरु वचनों को मान उसकी कमाई करता है।

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥

मानने वाले की सोच, ध्यान, बुद्धि अच्छी हो जाती है

मंनै सगल भवण की सुधि ॥

गुरुवचन माननेवालेको सब लोकोंकी खबरहो जाती है

मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥

गुरु वचन मानने वाला मुख पर थप्पड़ नहीं खाता।

मंनै जम कै साथि न जाइ ॥

गुरु वचन मानने वाला यम के साथ नहीं जाता।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

माया रहत मालिक का नाम इस प्रकार का है।

जेको मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

गुरु वचनों को मान कर उसकी कमाई करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥

गुरु वचन जानने वाला मार्ग में रुकता नहीं।

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥

इज्जत से प्रकट हो जाता है।

मंनै मगु न चलै पंथु ॥

गुरु वचनों वाला वेषों के भेदों में नहीं भटकता।

मंनै धरम सेती सनबंधु ॥

उस का धर्मियों के साथ सम्बन्ध रहता है।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

माया रहत मालक का नाम इस प्रकार का है।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

जो गुरु वचनां को मान कर उस की कमाई करता है

मंनै पावहि मोख दुआरु ॥

गुरु वचनों को मानने वाला मुक्ति के खुले द्वार जाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंनै परवारै साधारु ॥

अपने परिवार को भी साथ ले जाता है ।

मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥

गुर सिख आप पार होता है दूसरों को पार करता है

मंनै नानक भवहि न भिख ॥

वह संसार में भिक्षा नहीं मांगता ।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

माया रहत मालक का नाम इस प्रकार है ।

जेको मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

जो गुरु वचनों को मान उसकी कमाई करता है ।

पंच परवाण पंच परधानु ॥

प्रभु के दरबार में सन्त ही माने हुये मुखी हैं ।

पंचे पावहि दरगहि मानु ॥

वह प्रभु दर्गाह में आदर पाते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचे सोहहि दरिराजानु ॥

वह राजे के पास बैठे अच्छे लगते हैं।

पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥

उन सन्तों का एक मालिक में ध्यान होता है।

जेको कहै करै वीचारु ॥

यदि उन्हें कोई कुछ कहे वह विचार करते हैं।

करते कै करणै नाही सुमारु ॥

मालिक के जगत और उस के कामों का अंत नहीं।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥

पृथ्वी दया के पुत्र धर्म (बैल) के आसरे खड़ी है।

संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

सन्तोष और मर्यादा के साथ खड़ी है।

जे को बुझै होवै सचिआरु ॥

जो कोई समझ जाये वह सच्चा हो जाता हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धवलै उपरि केता भारु ॥

बैल के ऊपर कितना बोझ होगा ?

धरती होरु परै होरु होरु ॥

पृथ्वी आगे दूर से दूर है ।

तिसते भारु तलै कवणु जोरु ॥

उस बैल के नीचे और शक्ति वाली कौन वस्तु है ?

जीअ जाति रंगा के नाव ॥

पृथ्वी के ऊपर कई जीव,जातियां रंग नाम की हैं ।

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

सब के मस्तकों पर कलम फिरी हुई है ।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥

जो कोई इतना बड़ा लेख लिखना जानता हो ।

लेखा लिखिआ केता होइ ॥

तब वह लेखा लिखा कितना बड़ा हो जायेगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥

मालिक का रूप और शक्ति कितनी प्रशंसनीय है।

केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

कौन शक्ति वाला है जो उस की देन को समझे।

कीता पसाउ एको कवाउ ॥

एक शक्ति से उस ने सब पसारा किया है।

तिसते होए लख दरीआउ ॥

उस से लाखों दरया और सब कुछ बन गया है।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

मैं उसकी प्रकृति का क्या विचार करूं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं उस पर एक बार बलिहार नहीं जाता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो उसे अच्छा लगता है वही काम अच्छा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

है निरंकार तू सदा ही सलामत है ।

असंख जप असंख भाउ ॥

मालिक की दरगाह में जप और भाव वाले असंख्य हैं

असंख पूजा असंख तपताउ ॥

पूजा और तपस्या वाले बेअंत हैं ।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥

वेद ग्रंथों के ज़बानी पाठ करने वाले बहुत हैं ।

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥

योग द्वारा मन को उदास करने वाले बहुत हैं ।

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥

गुण ज्ञान को विचारने वाले भक्त असंख्य हैं ।

असंख सती असंख दातार ॥

दाते और सच्चे असंख्य हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असंख सूर मुह भख सार ॥

मुख पर लोहे की चोट खाने वाले असंख्य हैं।

असंख मोनि लिवलाइ तार ॥

एक टक ताड़ी (ध्यान) लाने वाले असंख्य हैं।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

मैं उसकी प्रकृति का क्या विचार करूं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं उस पर एक बार बलिहार नहीं जाता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो उसे अच्छा लगता है वही काम भला है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

हे निरंकार तू सदा ही सलामत है।

असंख मूरख अंध घोर ॥

निपट मूर्ख भी असंख्य हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असंख चोर हराम खोर ॥

हराम खाने वाले चोर असंख्य हैं।

असंख अमर करि जाहि जोर ॥

शक्ति से हुकम कर जाने वाले असंख्य हैं।

असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥

गला काट हत्या कमाने वाले बहुत हैं।

असंख पापी पापु करि जाहि ॥

पाप करने वाले पापी बहुत हैं।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

झूठ में फिरने वाले झूठे असंख्य हैं।

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥

मैल का खाना खाने वाले असंख्य हैं।

असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

निंदा का सिर पर बोझ चढ़ाने वाले असंख्य हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानकु नीचु कहै वीचारु ॥

यह सब नीचों का विचार कहा है।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं उस पर एक बार बलिहार नहीं जाता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो उसे अच्छा लगता है वही काम भला है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

हे निरंकार तू सदा ही सलामत है।

असंख नाव असंख थाव ॥

मालिक के नाम और स्थान असंख्य हैं।

अगंम अगंम असंख लोअ ॥

लोग भी असंख्य असंख्य असंख्य हैं।

असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥

उस बेअन्त का अंत कहे तो सिर पर भार होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अखरी नामु अखरी सालाह ॥

अक्षरों द्वारा उस के नाम की प्रशंसा करो।

अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

ज्ञान गीत और अधिक गुणों का विचार करो।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥

अक्षरों से लिखने बोलने की बाणी आ जाती है।

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

अक्षरों द्वारा ही सिर के लेख कहे जाते हैं।

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥

जिस ने यह लिखे उसके सिर पर कोई लेखक नहीं।

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

जैसे वह फरमाता है उसी तरह जीव पाते हैं।

जेता कीता तेता नाउ ॥

जितना जगत बना है यह सब उस का नाम ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विणु नावै नाही को थाउ ॥

नाम के बिना कोई स्थान नहीं।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

मैं उस की कुदरत का क्या विचार करूं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं उस पर एक बार बलिहार नहीं जाता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो उसे अच्छा लगता है वही काम भला है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

हे निरंकार तू सदा ही सलामत है।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥

हाथ पैर शरीर सारा मैल से भर जाये

पाणी धोतै उतरसु खेह ॥

तब वह मिट्टी मैल पानी से उतरती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
यदि कपड़ा मूत्र से खराब हो जाये
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
तो वह साबुन से धो लिया जाता है।
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
यदि बुद्धि पापों से भर जाये
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
तो वह नाम के रंग से धोई जाती है।
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
पवित्र या पापी कहने से नहीं हो जाता।
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
जैसा कोई काम करता है वैसा लिख कर ले जाता है
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
जीव अपना बोया आप ही खाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

सब जीव हुकम के बांधे आते जाते हैं।

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

तीर्थों पर तप, दया और दान करना।

जे को पावै तिलका मानु ॥

यदि कोई इन की शक्ति प्राप्त करे तो थोड़ी मिलती है

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥

जिन्होंने उपदेश सुन और मान कर मनमें प्रेम किया

अंतर गति तीरथि मलि नाउ ॥

वह अंदर के तीर्थ में मल के मैल धोते हैं।

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

हे प्रभु सब गुण आप में हैं मुझ में कोई नहीं।

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

शुभ कर्मों के किये बिना भक्ति नहीं होती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
स्वामी सुख, माया और वाणी बोलने वाला है।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
सत्य सुन्दर और आनन्दमय है।
कवणु सु वेला वखतु कवणु
वक्त और समय कौनसा है।
कवण थिति कवणु वारु ॥
तिथि और वार कौनसा है।
कवणि सि रुती माहु कवणु
ऋतु मास वह कौनसा है
जितु होआ आकारु ॥
जब समस्त संसार आकार रचा था।
वेल न पाईआ पंडती
पण्डित ने समय नहीं पाया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जि होवै लेखु पुराणु ॥

यदि पुराण में लिखा होता तो समय पा सकते ।

वखतु न पाइओ कादीआ

काज़ियां ने समय नहीं पाया

जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

यदि कुरान में लिखा होता तो पाते ।

थिति वारु ना जोगी जाणै

तिथि वार ज्योतिषी नहीं जान सकते ।

रुति माहु ना कोई ॥

और ऋतु महीना कोई नहीं ।

जा करता सिरठी कउ साजे

जो कर्ता दुनिया को बनाता है

आपे जाणै सोई ॥

वही दुनिया के भेदों को जानता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किव करि आखा किव सालाही

मैं उस की कैसे प्रशंसा करूँ

किउ वरनी किव जाणा ॥

और कैसे उसका वर्णन करूं और जानूं ।

नानक आखणि सभु को आखै

सब कोई कहे हुए को ही कहता है

इकदू इकु सिआणा ॥

एक से एक स्याना (चतुर) है ।

वडा साहिबु वडी नाई

बड़े नाम वाला बड़ा स्वामी है

कीता जाका होवै ॥

जिस का किया सब होता है ।

नानक जे को आपौ जाणै

जो मालिक से अपने आप को बड़ा जानता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥

वह आगे जाकर शोभा नहीं पाता ।

पाताला पाताल लख

मालिक की बनाई दुनिया में लाखों पाताल

आगासा आगास ॥

और लाखों आकाश हैं, कोई अंत नहीं ।

ओड़क ओड़क भालि थके

आकाशों पातालों का अंत पाते थक गये

वेद कहनि इक वात ॥

वेद वक्ता भी कहते हैं कि अंत नहीं ।

सहस अठारह कहनि कतेबा

संसार की १८ हज़ार पुस्तकें कहती हैं

असुलू इकु धातु ॥

वास्तव में परमेश्वर नाश रहित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेखा होइ त लिखीऐ

स्वामी का हिसाब हो तो लिखें

लेखै होइ विणासु ॥

हिसाब करने वाले का ही नाश हो जाता है।

नानक वडा आखीऐ

मालिक को बड़े से बड़ा कहें वह कितना बड़ा है

आपे जाणै आपु ॥ २२ ॥

इस बात को वह आप ही जानता है।

सालाही सालाहि

मालिक की सराहना करने वालों ने बड़ा सराहा है।

एती सुरति न पाईआ ॥

परन्तु उन्हें तनिक भी पता नहीं चला।

नदीआ अतै वाह

जैसे समुद्र में कई नदी नाले पड़ते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
परन्तु वह समुद्र का अंत नहीं पा सकते ।
समुंद साह सुलतान
जैसे समुद्र के रत्नों का अन्त नहीं ।
गिरहा सेती मालु धनु ॥
साहुकार पास बेअन्त धन माल हो
कीड़ी तुलि न होवनी
वह साहुकार एक कीड़ी के समान नहीं ।
जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥
जिस कीड़ी को मालिक मन से नहीं भुलाता ।
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
मालिक की बड़ाई और कथाओं का अन्त नहीं ।
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
उस के लेन देन का कोई अन्त नहीं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेखा होइ त लिखीऐ

स्वामी का हिसाब हो तो लिखें

लेखै होइ विणासु ॥

हिसाब करने वाले का ही नाश हो जाता है ।

नानक वडा आखीऐ

मालिक को बड़े से बड़ा कहें वह कितना बड़ा है

आपे जाणै आपु ॥ २२ ॥

इस बात को वह आप ही जानता है ।

सालाही सालाहि

मालिक की सराहना करने वालों ने बड़ा सराहा है ।

एती सुरति न पाईआ ॥

परन्तु उन्हें तनिक भी पता नहीं चला ।

नदीआ अतै वाह

जैसे समुद्र में कई नदी नाले पड़ते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥

परन्तु वह समुद्र का अंत नहीं पा सकते ।

समुंद साह सुलतान

जैसे समुद्र के रत्नों का अन्त नहीं ।

गिरहा सेती मालु धनु ॥

साहुकार पास बेअन्त धन माल हो

कीड़ी तुलि न होवनी

वह साहुकार एक कीड़ी के समान नहीं ।

जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

जिस कीड़ी को मालिक मन से नहीं भुलाता ।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥

मालिक की बड़ाई और कथाओं का अन्त नहीं ।

अंतु न करणै देणि न अंतु ॥

उस के लेन देन का कोई अन्त नहीं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥

सुनने देखने का कोई अन्त नहीं ।

अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥

उस के मन में क्या है कोई अन्त नहीं ।

अंतु न जापै कीता आकारु ॥

जगत आकार का भी कोई अन्त नहीं ।

अंतु न जापै पारावारु ॥

उस के ओर घोर का भी कोई अन्त नहीं ।

अंत कारणि केते बिललाहि ॥

अन्त के लिये कई रोते फिरते हैं ।

ताके अंत न पाए जाहि ॥

उस के अन्त नहीं पाये जाते ।

एहु अंतु न जाणै कोइ ॥

इस अन्त को कोई नहीं जान सकता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
जितना बड़ा कहें उतना ही बड़ा होता है।

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
वह स्वामी बड़ा है उस का स्थान ऊंचा है।

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
ऊंचे पर ऊंचा नाम है।

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
इतना बड़ा ऊंचा कोई नहीं हो सकता।

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
उस ऊंचे को वह स्वयं ही जान सकता है।

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
जितना बड़ा वह है वह स्वयं ही समझता है।

नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥
जो हमें मिलता है उस की कृपा से ही मिलता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥

उस की देनों का खज़ाना लिखा नहीं जाता ।

वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

वह बड़ा दाता है और उसे तिलमात्र इच्छा नहीं ।

केते मंगहि जोध अपार ॥

कई अपार सूरमे उस से मांगते हैं ।

केतिआ गणत नही वीचारु ॥

कई लोग हैं जिन की कोई गिनती नहीं ।

केते खपि तुटहि वेकार ॥

कई विकारों में खर खप कर मर जाते हैं ।

केते लै लै मुकरु पाहि ॥

कई ले ले कर मुकर जाते हैं ।

केते मूरख खाही खाहि ॥

कई मूर्ख भोजनों को खाते आये हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केतिआ दूख भूख सद मार ॥

कईयों को दुःख भूख की सदा मार पड़ती है ।

एहि भि दाति तेरी दातार ॥

हे दातार यह भी तेरी दात है ।

बंदि खलासी भाणै होइ ॥

आज्ञा में ही मुक्ति प्राप्त होती है ।

होरु आखि न सकै कोइ ॥

मालिक के बिना और कोई कह भी नहीं सकता ।

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥

जो कोई मूर्ख कहने भी लगे ।

ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥

वह जानता है कि जितने वह मूंह पर थप्पड़ खाता है

आपे जाणै आपे देइ ॥

वह स्वयं हमारी इच्छायें जानता और पूरी करता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आखहि सि भि केई केइ ॥

उस के धन्यवाद की बातें कोई ही कह सकता है ।

जिसनो बखसे सिफति सालाह ॥

जिसे वह स्वामी स्वयं प्रदान करता है ।

नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

वह बादशाहों का बादशाह है ।

अमुल गुण अमुल वापार ॥

गुणों का मुल्य और व्यापार अमूल्य है ।

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

गुणों के व्यापारी और खज़ाने भी अमूल्य हैं ।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥

गुणों को लाने और ले जाने वाले अमूल्य हैं ।

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

गुणों में प्रेम करने और समा रहने वाले अमूल्य हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥

मालिक के कानून और अदालतें भी अमूल्य हैं।

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥

तराजू और वट्टे (तोलने वाला) भी अमूल्य है।

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

बखशिश और परवाना भी अमूल्य है।

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

क्षमा करने वाले का क्षमा करना भी अमूल्य है।

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ॥

उस अमूल्य मालिक का वर्णन नहीं किया जाता।

आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

कहने वाले कह कह कर साथ ही मिल रहे हैं।

आखहि वेद पाठ पुराण ॥

वेदों पुराणों के पढ़ने वाले भी कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आखहि पड़े करहि वखिआण ॥

पढ़ कर व्याख्यान करने वाले भी कहते हैं ।

आखहि बरमे आखहि इंद ॥

ब्रह्मा और इन्द्र भी कहते हैं ।

आखहि गोपी तै गोविंद ॥

गोपियां और कृष्ण जी भी कहते हैं ।

आखहि ईसर आखहि सिध ॥

शिवजी और सिध भी कहते हैं ।

आखहि केते कीते बुध ॥

बुद्ध देवता भी कहते हैं ।

आखहि दानव आखहि देव ॥

दैंत देवते भी कहते हैं ।

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥

सुर नर मुनि दास (सेवक) भी कहते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केते आखहि आखणि पाहि ॥

कई कहते और कहने लग जाते हैं ।

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥

कई कह २ कर उठ कर चले जाते हैं ।

एते कीते होरि करेहि ॥

इतने किये और आगे कई करेगा ।

ता आखि न सकहि केई केइ ॥

तो कोई कुछ भी नहीं कह सकेगा ।

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥

जितना बड़ा वह आप है उतना ही होता है ।

नानक जाणै साचा सोइ ॥

वह आप ही जानता है कि मैं कितना बड़ा हूं ।

जे को आखै बोलु विगाड़ु ॥

मालिक का अंत कहने वाला बोल बिगाड़ होता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आखहि पड़े करहि वखिआण ॥

पढ़ कर व्याख्यान करने वाले भी कहते हैं।

आखहि बरमे आखहि इंद ॥

ब्रह्मा और इन्द्र भी कहते हैं।

आखहि गोपी तै गोविंद ॥

गोपियां और कृष्ण जी भी कहते हैं।

आखहि ईसर आखहि सिध ॥

शिवजी और सिध भी कहते हैं।

आखहि केते कीते बुध ॥

बुद्ध देवता भी कहते हैं।

आखहि दानव आखहि देव ॥

दैंत देवते भी कहते हैं।

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥

सुर नर मुनि दास (सेवक) भी कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केते आखहि आखणि पाहि ॥

कई कहते और कहने लग जाते हैं ।

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥

कई कह २ कर उठ कर चले जाते हैं ।

एते कीते होरि करेहि ॥

इतने किये और आगे कई करेगा ।

ता आखि न सकहि केई केइ ॥

तो कोई कुछ भी नहीं कह सकेगा ।

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥

जितना बड़ा वह आप है उतना ही होता है ।

नानक जाणै साचा सोइ ॥

वह आप ही जानता है कि मैं कितना बड़ा हूं ।

जे को आखै बोलु विगाड़ु ॥

मालिक का अंत कहने वाला बोल बिगाड़ होता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥

उसे गवारों का सिरगवार लिखा जाता है।

सो दरु केहा सो घरु केहा

वह घर द्वार बहुत सुन्दर है।

जितु बहि सरब समाले ॥

जहां बैठ कर सब की रखवाली करता है।

वाजे नाद अनेक असंखा

वहां अनेकां बाजे बजने वाले और

केते वावण हारे ॥

अनेकों बजाने वाले हैं।

केते राग परी सिउ कहीअनि ॥

कितने राग रागनियां सहित और

केते गावण हारे ॥

गाने वाले हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु

तुझे पवन, जल और आग गाते हैं

गावै राजा धरमु दुआरे ॥

और धर्म राजा भी गाता है।

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि

जीवों के लेखों को जानने वाला चित्रगुप्त गाता है।

लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

उन के लेखों को धर्मराज विचारता है।

गावहि ईसरु बरमा देवी

शिव ब्रह्मा भी तुझे गाते हैं

सोहनि सदा सवारे ॥

वह भी तेरे बनाये हुए हैं।

गावहि इंद इदासणि बैठे

इन्द्र सिंहासन पर बैठे तुझे गाते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवतिआ दरि नाले ॥

देवतों के साथ।

गावहि सिध समाधी अंदरि

सिद्ध समाधियों के अन्दर गाते हैं

गावनि साध विचारे ॥

और साधु विचार कर गाते हैं।

गावनि जती सती संतोखी

जती सती और सन्तोषी भी गाते हैं।

गावहि वीर करारे ॥

और वीर योधा भी गाते हैं।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर

ऋषि और पण्डित भी पढ़ते गाते हैं

जुगु जुगु वेदा नाले ॥

युगों २ से वेदों के साथ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि

मनमोहन को मनमोहनियां भी

सुरगा मछ पइआले ॥

स्वर्ग मातलोक और पाताल की।

गावनि रतन उपाए तेरे

गाते हैं तुझे तेरे रत्न भी

अठसठि तीरथ नाले ॥

अड़सठ तीर्थों के साथ।

गावहि जोध महा बल सूरा

सूरमे महाबली योधे गाते हैं

गावहि खाणी चारे ॥

और चारों खानियां भी तुझे गाती हैं।

गावहि खंड मंडल वरभंडा

भूमंडल भागों पर सारा जहान तुझे गाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करि करि रखे धारे ॥

जो तेरे सुन्दर बना बना कर रखे हुए हैं।

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि

वही तुझे गाते हैं जो तुझे भाते हैं

रते तेरे भगत रसाले ॥

जो तेरी रसदायक भक्ति में रंगे हैं।

होरि केते गावनि

और कितने गाते हैं

से मै चिति न आवनि

मुझे याद नहीं आते

नानकु किआ वीचारे ॥

गुरु जी कहते हैं मैंने विचार कर कहा है।

सोई सोई सदा सचु साहिबु

तू ठीक सच्चा मालिक एक ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साचा साची नाई ॥

और सच्चे नाम वाला है।

है भी होसी जाइ न जासी

वह पीछे भी था अब भी है आगे भी होगा

रचना जिनि रचाई ॥

जिस ने यह सब कुछ बनाया है।

रंगी रंगी भाती करि करि

रंग बिरंगी अच्छी और बुरी दुनिया

जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥

जिसने माया द्वारा उत्पन्न की है।

करि करि वेखै कीता आपणा

उसी प्रकार वह अपने किये को करके देखता है

जिव तिसदी वडिआई ॥

जिस प्रकार उसकी बड़ाई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो तिसु भावै सोई करसी

जो उसे भाता है वही करता है

हुकमु न करणा जाई ॥

उसकी आज्ञा का उलंघन नहीं होता।

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु

वह पातशाह शाहां का पातशाह है

नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥

मैं दास उस की आज्ञा में रहता हूं।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली

मैं सन्तोष के कुण्डल और लज्जा की झोली पाई है।

धिआन की करहि बिभूति ॥

और मालिक ने ध्यान की राख शरीर को लगाई है।

खिथा कालु

खिन्था काल की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुआरी काइआ

कंवारी कन्या देह समझी है

जुगति डंडा परतीति ॥

युक्ति और भरोसे का डंडा है।

आई पंथी सगल जमाती

समस्त संसार (जमात) मेरा पन्थ है

मनि जीतै जगु जीतु ॥

मन को जीत जगत जीतना मेरा धर्म है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

मैं उसे सदा नमस्कार करता हूं।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जो पहले रंग और गिनती के बिना अनादि है

जुगु जुगु एको वेसु ॥ २८ ॥

जिस का युगों २ अन्दर एक रूप (वेष) है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि

ज्ञान का खाना दया भंडार

घटि घटि वाजहि नाद ॥

घट घट में बाजे बजें यह मेरा नाद है।

आपि नाथु नाथी सभ जाकी

वह मेरा मालिक है जिस की सब दुनिया नथी है।

रिधि सिधि अवरा साद ॥

रिद्धियों सिद्धियों का तो औरों को स्वाद आता है।

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि

संयोग व्योग के कार्य चलाते हैं।

लेखे आवहि भाग ॥

जो लेख में लिखा है वह आ मिलता है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

मैं उसे सदा नमस्कार करता हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जो पहले रंग और गिनती के बिना अनादि है

जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥

जिस का युगों २ में एक वेष है।

एका माई जुगति विआई

एक महां माता है जो शक्ति से प्रसूता हुई है।

तिनि चेले परवाणु ॥

जिस ने तीन चेले माने हुए उत्पन्न किये हैं।

इकु संसारी इकु भंडारी

एक संसार का कर्ता एक भंडार देता है

इकु लाए दीबाणु ॥

एक जगत को नाश करता है।

जिव तिसु भावै तिवै चलावै

जैसे उसे भाता है वह उसे वैसा चलाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिव होवै फुरमाणु ॥

तथा जीवों को आज्ञा करता है ।

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै

मालिक तो उन्हें देखता है वह नहीं देखते

बहुता एहु विडाणु ॥

यह बात बहुत आश्चर्य की है ।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

मैं उसे सदा नमस्कार करता हूं ।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जो पहले रंग गिनती के बिना अनादि है

जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

जिस का युगों २ में एक वेष है ।

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

उस का आसन और लंगर सब में लगा है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥

जो प्राप्त हुआ एक बार ही प्राप्त हुआ है।

करि करि वेखै सिरजणहारु ॥

वह सिरजनहार कर कर के देखता है।

नानक सचे की साची कार ॥

उस सच्चे की सब कार सची है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

मैं उसे सदा नमस्कार करता हूं।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जो पहले रंग और गिनती के बिना अनादि है।

जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

जिस का युगों २ में एक वेष है।

इकदू जीभौ लख होहि

एक रसना से लाखों हो जायें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लख होवहि लख वीस ॥

तथा लाखों से और बीस लाख हो जायें ।

लखु लखु गेड़ा आखीअहि

लाखों २ बार एक गेड़ा (चक्कर) लाया जाये

एकु नामु जगदीस ॥

तब एक नाम मालिक का बनता है ।

एतु राहि पति पवड़ीआ

यह तो इज्जत के मार्ग की सीढ़ियां हैं ।

चड़ीऐ होइ इकीस ॥

जिन मार्गों पर चढ़े एक ईश्वर रूप बनते हैं ।

सुणि गला आकास की

आकाश की बातें सुन कर

कीटा आई रीस ॥

कीड़ों (कीटों) को भी रीस हुई हम भी चलें ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक नदरी पाईऐ

मालिक की कृपा से उसे मिल जाता है

कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

और झूठों की झूठी ही गप्पें हैं।

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥

न ज़ोर से कहा जाता है और न चुप ही होती है।

जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥

दिया और मांगा भी ज़ोर से नहीं जाता।

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥

जीना और मरना भी ज़ोर से नहीं होता।

जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥

राज माल और मन का शोर भी ज़ोर से नहीं होता।

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥

श्रुति और ज्ञान का विचार भी ज़ोर से नहीं होता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥

युक्ति के ज़ोर से संसार नहीं छूटता ।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥

जिस के हाथ में ज़ोर है वह करके देख ले ।

नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

आप सब उच्च बनते हैं नीच कोई नहीं बनता ।

राती रुती थिती वार ॥

मालिक ने दिन, रात, वार और ऋतुयें बनाई हैं ।

पवण पाणी अगनी पाताल ॥

वायु, अग्नि, जल और पाताल बनाये हैं ।

तिसु विचि धरती

इन स्थानों में पृथ्वी है

थापि रखी धरमसाल ॥

धर्म का स्थान बनाकर रक्खा है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥

यहां कई रंगों और युक्तियों के जीव हैं।

तिनके नाम अनेक अनंत ॥

उन के अनेकों (अनन्त) नाम हैं।

करमी करमी होइ वीचारु ॥

उन के अच्छे बुरे कामों का विचार होता है।

सचा आपि सचा दरबारु ॥

वह सच्चे दरबार वाला सच्चा है।

तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥

वहां माने हुए सन्त अच्छे लगते हैं।

नदरी करमि पवै नीसाणु ॥

उसकी मेहरबानी और बखशिश होती है।

कच पकाई ओथै पाइ ॥

वहां कच्चों को पकाया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

वहां जीव जाता है तो अच्छा बुरा जाना जाता है।

धरम खंड का एहो धरमु ॥

धर्म नेम वालों का वही स्थान है।

गिआन खंड का आखहु करमु ॥

अब ज्ञान सोच करने वालों के स्थान बताते हैं।

केते पवण पाणी वैसंतर

वायु, जल, अग्नि आदि देवता वहां कितने ही हैं

केते कान्ह महेस ॥

तथा कृष्ण और शिव वहां कितने ही हैं।

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि

वहां कितने ही ब्रह्मा बनत बनाने वाले हैं

रूप रंग के वेस ॥

रूपों, रंगों और वेषों की।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केतीआ करम भूमी मेर केते

वहां अच्छे २ कामों वाली भूमि पर्वत और

केते धू उपदेस ॥

ध्रुव जैसे तारे और नारद जैसे उपदेशक हैं।

केते इंद चंद सूर केते

कितने इंद्र, चंद्र, सूर्य और

केते मंडल देस ॥

मण्डल देश कितने हैं।

केते सिध बुध नाथ केते

कितने गोरख सिद्ध महात्मा बुद्ध नवनाथ और

केते देवी वेस ॥

देवतों के सुन्दर वेष हैं।

केते देव दानव मुनि केते

कितने देवते, दैंत, मुनि और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केते रतन समुंद ॥

समुद्रों के रत्न बेअन्त पड़े दीखते हैं ।

केतीआ खाणी केतीआ बाणी

चार खाणियां चार बाणियां,

केते पात नरिंद ॥

और बादशाहों के बादशाह बेअन्त हैं

केतीआ सुरती सेवक केते

ज्ञानवान और दास बेअन्त हैं ।

नानक अंतु न अंतु ॥ ३५ ॥

जो उनके अन्त का कोई अन्त नहीं ।

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥

विचार ज्ञान करने वालों का बड़ा तेज है ।

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥

वहां कानों और मन से समझने का आनन्द है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरम खंड की बाणी रूपु ॥

कमाई करने वालों की बाणी मोहनी हो जाती है।

तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥

वहां बहुत सुन्दर बणातर उपड़ी जाती है।

ताकीआ गला कथीआ ना जाहि ॥

उनकी बातों का कोई वर्णन नहीं कर सकता।

जेको कहै पिछै पछुताइ ॥

जो कोई बोलता है लज्जित होना पड़ता है।

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥

वहां घड़ी जाती हैं विचार बुद्धि तथा

तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि॥३६॥

देवतों सिद्धों जैसी शुद्धि हो जाती है।

करम खंड की बाणी जोरु ॥

उत्तम कार्य करने वालों की वाणी प्रबल हो जाती है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिथै होरु न कोई होरु ॥

वहां पहुंचने की किसी को शक्ति नहीं।

तिथै जोध महाबल सूर ॥

वहां योधे सूरमे महाबली रहते हैं।

तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥

उन में नाक तक प्रभु का नाम भरा है।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥

मालिक महिमा में उनका मन सिला हुआ है।

ताके रूप न कथने जाहि ॥

उनके रूप कहे नहीं जाते।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥

न वे मरते हैं न वे ठगे जाते हैं।

जिनकै रामु वसै मन माहि ॥

जिन के मन में परमेश्वर बसता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिथै भगति वसहि के लोअ ॥

उस लोक में भक्त ही भक्त रहते हैं।

करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥

उनका मन सच्चा है वह सदा आनन्द करते हैं।

सच खंडि वसै निरंकारु ॥

सच बोलने वालों के पास प्रभु रहता है।

करि करि वेखै नदरि निहाल ॥

कृपा दृष्टि से प्रसन्न कर देता है।

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥

वहाँ जगत के कई भाग देश और बड़े भाग हैं।

जे को कथै त अंत न अंत ॥

उन देशों के अन्त का कोई अन्त नहीं।

तिथै लोअ लोअ आकार ॥

उन लोकों के आकारों का कोई अन्त नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥

जैसे आज्ञा देती है वैसे कर्म मिलता है।

वेखै विगसै करि वीचारु ॥

वह विचार करके देखता है और प्रसन्न होता है।

नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

उस स्थान को खोल कर बताना लोहे जैसा कठिन है।

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥

सात सुनारों का पहरा और धीरज सुनारा है।

अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥

बुद्धि, अहिरन और वेद हथियार है।

भउ खला अगनि तप ताउ ॥

मालिक का भय खाल पर तप करना अग्नि है।

भांडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥

प्रेम के बर्तन में नाम अमृत ढल २ कर पड़ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥

सच्ची टकसाल में शब्द द्वारा घड़ा जाता है।

जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥

जिन पर कृपा हो उसको अच्छी कार मिलती है।

नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

गुरुमुखों को अपनी कृपा से प्रसन्नता कर देता है।

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता

समस्त संसार का पवन गुरु, जल पिता,

माता धरति महतु ॥

तथा बड़े महत्व वाली पृथ्वी माता है।

दिवसु राति दुइ दाई दाइआ

दिन रात दोनों दाया अर्थात् खेलाने वाले हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खेलै सगल जगतु ॥

जिस में समस्त संसार खेलता है ।

चंगिआईआ बुरिआईआ

सब जीवों की अच्छाईयां बुराईयां

वाचै धरमु हदूरि ॥

धर्म राज के पास पढ़ी जाती हैं ।

करमी आपो आपणी

समस्त जीव अपने २ कर्मों के अनुसार

के नेड़ै के दूरि ॥

कोई निकट हो जाता है और कोई दूर हो जाता है ।

जिनी नामु धिआइआ

जिन्हों ने नाम स्मरण किया है

गए मसकति घालि ॥

वह कमाई का लाभ ले गए हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक ते मुख उजले

उनके मुख वहां बड़े प्रसन्न हैं।

केती छुटी नालि ॥१॥

और भी अनेकों उनके दर्शनों से मुक्ति पा गए।

—:०:—

शबद हज़ारे सटीक

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥

मेरा मन गुरु दर्शनों को तड़पता है।

बिलप करे चात्रिक की निआई ॥

पपीहे की भांति विलाप करता है।

त्रिखा न उतरै सांति न आवै

प्यास नहीं उतरती शांति नहीं आती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥

संत प्यारे के दर्शनों के बिना।

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई

घोल घुमाऊं और बलि बलि जाऊं

गुरदरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥रहाउ॥

मैं गुरु प्यारे के दर्शनों पर।

तेरा मुखु सुहावा जीउ

तेरा मुख सुन्दर है

सहज धुनि बाणी ॥

जिस से धीरे २ मीठी वाणी बोलता है।

चिरु होआ देखे सारिंग पाणी ॥

पपीहे को तो जल देखे बहुत समय हुआ है।

धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ

वह देश धन्य है जहां तू बसा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥

हे मेरे सज्जन मित्र प्यारे !

हउ घोली हउ घोलि घुमाई

घोल घुमाऊं और बलि बलि जाऊं

गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥रहाउ॥

मैं गुरु प्यारे के दर्शनों पर ।

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता॥

एक घड़ी भी न मिले तो कलियुग आ जाता है ।

हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥

हे प्यारे भगवंत अब तुझे कब मिलें ।

मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै

मुझे रात नहीं कटती नींद नहीं आती

बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥

गुरु द्वारे अमृतसर दर्शनों के बिना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई

घोल घुमाऊं और बलि बलि जाऊं

तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥रहाउ॥

मैं ऐसे गुरु द्वार से ।

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥

बड़े अच्छे कर्म हुए जो अब गुरु संत मिल गए ।

प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥

परमेश्वर अविनाशी अब घर में ही मिल गया है ।

सेव करी पलु चसा न विछुड़ा

मैं सेवा करूंगा एक पल भी नहीं विछुड़ता

जन नानक दास तुमारे जीउ ॥

मैं दास बलिहार जाता हूं ।

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई

घोल घुमाऊं और बलि बलि जाऊं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जननानकदासतुमारेजीउ॥रहाउ॥१॥८॥

मैं आप का दास हूं।

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ

निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं

गुरप्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा

मेरा अपना ही हृदय डरता है

कै सिउ करी पुकार ॥

मैं किसके आगे पुकार करूँ।

दूख विसारणु सेविआ

सेवा की है जो दुःखों के दूर करने वाला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदा सदा दातारु ॥१॥

सदा सदा दाता है।

साहिबु मेरा नीत नवा

मेरा मालिक हर रोज़ नये से नया है

सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

और सदा दाता है।

अनदिनु साहिबु सेवीऐ

रात दिन मालिक की सेवा करें

अंति छडाए सोइ ॥

जो अन्त में यमों से छुड़ा लेता है।

सुणि सुणि मेरी कामणी

हे जीव स्त्री सुन !

पारि उतारा होइ ॥२॥

इस प्रकार तेरा पार उतारा हो जाए गा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दइआल तेरै नामि तरा ॥

हे दयाल तेरे नाम से

सद कुरबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सदा बलिहारी जाता हूं ।

सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥

तू सब में एक सत्ता है दूसरा और कोई नहीं ।

ताकी सेवा सो करे

वह उसकी सेवा करता है

जाकउ नदरि करे ॥ ३ ॥

जिस पर वह कृपा करता है ।

तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥

हे प्यारे मैं तेरे बिना कैसे रहूं ।

सा वडिआई देहि

तू मुझे वह बड़ाई दे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितु नामि तेरे लागि रहां ॥

जिस करके मैं तेरे नाम में लगी रहूं।

दूजा नाही कोइ

दूसरा और कोई नहीं है

जिसु आगै पिआरेजाइकहा॥१॥रहाउ॥

जिस के आगे मैं जाकर प्रार्थना करूं।

सेवी साहिबु आपणा

मैं अपने मालिक की ही सेवा करूंगी

अवरु न जाचउं कोइ ॥

और किसी से कुछ नहीं माँगती।

नानकु ताका दासु है

मैं उसका दास हूं

बिंदबिंद चुखचुख होइ॥१॥रहाउ॥४॥१॥

और तनिक २ करके बलिहार जाता हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साहिब तेरे नाम विटहु

हे दयाल मैं तेरे नाम पर

बिंदबिंदचुखचुखहोइ॥ १ ॥रहाउ॥४॥ १॥

तनिक २ करके बलिहार जाता हूं।

तिलंग महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे

इस शरीर को माया की पाण (आकड़) चढ़ी हुई है

लीतड़ा लबि रंगाए ॥

और लब से रंगा है।

मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे

यह चोला मेरे प्यारे पति को नहीं भाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किउ धन सेजै जाए ॥१॥

बताओ अब स्त्री सेज के ऊपर कैसे जाए।

हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना

हे कृपालु मैं आप पर बलिहार जाऊं

हंउ कुरबानै जाउ ॥

मैं आप पर बलिहार जाता हूं।

हंउ कुरबानै जाउ तिना कै

मैं उनपर सदा २ बलिहार जाता हूं

लैनि जो तेरा नाउ ॥

जो तेरा नाम लेते हैं।

लैनि जो तेरा नाउ तिना कै

जो तेरा नाम लेते हैं उन पर

हंउ सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ॥

मैं सदा सदा बलिहार जाता हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे

यदि यह शरीर मिट्टी बन जाए

पाईऐ नाउ मजीठ ॥

और प्रीतम का नाम मजीठ अन्दर पड़ जाए।

रंङण वाला जे रंङै साहिबु

रंगने वाला वह मालिक रंग चढ़ा दे

ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥

तो फिर वैसा रंग कहां से देखना है।

जिनके चोले रतड़े पिआरे

जिन के शरीर चोले प्रेम रंग से रंगे हैं

कंतु तिना कै पासि ॥

परमेश्वर उन के पास है।

धूड़ि तिना की जे मिलै जी

मुझे उन के चरणों की धूल मिल जाये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहु नानक की अरदासि ॥ ३ ॥

दास प्रार्थना करता है ।

आपे साजे आपे रंगे

वह जीवों को बनाता और प्रेम का रंग चढ़ाता है

आपे नदरि करेइ ॥

आप ही कृपा करता है ।

नानक कामणि कंतै भावै

यदि स्त्री पति को अच्छी लगे

आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

तो आप ही उसे अपने साथ मिला लेता है ।

तिलंग म० १ ॥

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥

हे कमलिए अहंकार क्यों करती हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपनड़ै घरि हरि रंगो

तेरे अपने हृदय अंदर एक मालिक प्रेमी है

की न माणेहि ॥

तू उस के साथ मिल कर आनन्द क्यों नहीं भोगती ।

सहु नेड़ै धन कंमलीए

हे कमली स्त्री मालिक तो पास है

बाहरु किआ ढूढेहि ॥

तू बाहर क्यों खोजती फिरती है ।

भै कीआ देहि सलाईआ नैणी

तू नेत्रों में ईश्वर के भय की सलाईयाँ डाल

भाव का करि सं गारो ॥

तथा नेत्रों में प्रेम का शृङ्गार कर ।

ता सोहागणि जाणीऐ लागी

तब ही सुहागन जानी जायेंगी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जा सहु धरे पिआरो ॥१॥

यदि इस मालिक संग प्रेम करने लग जायें।

इआणी बाली किआ करे

अनजान स्त्री क्या करे ?

जा धन कंत न भावै ॥

यदि उस पति को अच्छी ही नहीं लगती।

करण पलाह करे बहुतेरे

बहुत जादू टूणे करती है।

सा धन महलु न पावै ॥

परन्तु ऐसी स्त्री प्रभु के द्वार को नहीं पा सकती।

विणु करमा किछु पाईऐ नाही

कर्मों के बिना कुछ नहीं मिलेगा।

जे बहुतेरा धावै ॥

चाहे दौड़ी (भागी) फिरें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लब लोभ अहंकार की माती

लोभ मोह अहंकार में (मस्त) माती हैं

माइआ माहि समाणी ॥

और माया में डूबी हुई।

इनी बाती सहु पाईऐ नाही

इन बातों से स्वामी की प्राप्ती नहीं है

भई कामणि इआणी ॥२॥

स्त्री तो अनजान हो गई है।

जाइ पुछहु सोहागणी वाहै

आप सुहागणों को जाकर पूछो।

किनी बाती सहु पाईऐ ॥

उन्हों ने स्वामी को कैसे पाया है ?

जो किछु करे सो भला करि मानीऐ

जो कुछ करे उसे भला करके मानिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥

दलीलों और तर्क वितर्क को दूर कर दें।

जाकै प्रेमि पदारथु पाईऐ

जिस कारण प्रेम पदार्थ को पालें

तउ चरणी चितु लाईऐ ॥

तब इस प्रकार मालिक के चरणों से चित्त जोड़े।

सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै

जैसे मालिक कहे वैसे करे मन तन भेंटा करे।

ऐसा परमलु लाईऐ ॥

ऐसा यह सुगंध वाला इतर तन को लाओ।

एव कहहि सोहागणी भैणे

मैं ने तुझे ठीक कहा है, सुहागवंती बहन !

इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥

इन बातों से मालिक मिलता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ

आपा खो कर तभी प्रीतम मिलता है

अउरु कैसी चतुराई ॥

और चतुराई किस काम ।

सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै

जब वह कृपालता की दृष्टि से देखे तो लेखे लगे

कामणि नउ निधि पाई ॥

तब स्त्री नवनिधियाँ पा लेती है ।

आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि

जो अपने पति को प्रिय है वही सुहागवंती है

नानक सा सभराई ॥

वह बहन भाईयों वाली है ।

ऐसै रंगि राती सहज की माती

इस प्रकार के प्रेम में तनिक शांति स्वभाव में मस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहिनिसि भाइ समाणी ॥

रात दिन प्रेम में समाई हुई।

सुंदरि साइ सरूप बिचखणि

वह ही सुन्दर उत्तम नेत्रों वाली

कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

वह ही चतुर है।

सूही महला १ ॥

कउणु तराजी कवणु तुला

कौनसी तराज़ू कौनसा बाट (वट्टा)

तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥

कौनसा सराफ़ बुलाऊं ?

कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा

किस गुरु से उपदेश लूँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कै पहि मुलु करावा ॥१॥

किस से मूल्य कराऊँ ?

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥

हे मेरे लाल मैं तो तेरा अंत ही नहीं जानता।

तूं जलथलिमहीअलि भरिपुरिलीणा

जलों थलों धरती आकाश में भरा है

तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ॥

स्वयं ही सर्व में समाया हुआ है।

मनु ताराजी चितु तुला

मन तराज़ू चित्त वट्टा

तेरी सेव सराफु कमावा ॥

और तेरी सेवा करनी सराफ है।

घट ही भीतरि सो सहु तोली

मन के अन्दर ही तुझे विचार लूँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन बिधि चितु रहावा ॥२॥

इस रीति से मन को रोक रक्खूँ ।

आपे कंडा तोलु तराजी ॥

स्वामी स्वयं ही करण्डा (तराज़ू) और तोल-माप है ।

आपे तोलणहारा ॥

स्वयं ही तोलने वाला है ।

आपे देखै आपे बूझै

स्वयं ही देखता और समझता है ।

आपे है वणजारा ॥३॥

और स्वयं ही मूल्य लेता है ।

अंधुला नीच जाति परदेसी

यह जीव अंधा नीच जाति वाला परदेशी है ।

खिनु आवै तिलु जावै ॥

पल में आता जाता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताकी संगति नानकु रहदा

इस नीच मन की संगति में मैं रहता हूँ।

किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥६॥

फिर किस प्रकार उस स्वामी को प्राप्त करूं।

१ ओं सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुर प्रसादि
रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ

तूँ बादशाह हैं मैं तुझे एक मीयाँ (पिता) कहूं।

तेरी कवन वडाई ॥

तो इस में तेरी क्या शोभा है।

जो तू देहि सु कहा सुआमी

हे प्रभु ! जो तू मुझे देता है सो मैं कहता हूं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥

और मुझ मूर्ख से कुछ नहीं कहा जाता।

तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥

यदि तूँ मुझे समझा दे तो मैं तेरे गुण गाऊं।

जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ॥

जिससे मैं तेरे सच्चे नाम में मिला रहूं।

जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते

जो कुछ हुआ है यह सब कुछ आप से ही हुआ है

तेरी सभ असनाई ॥

तेरी सब से जान पहचान है।

तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब

मेरे स्वामी मैं तेरा अंत नहीं जानता

मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥

मुझ अन्धे में क्या चतुराई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किआ हउ कथी कथे कथि देखा

मैं क्या कहूं और क्या कथ कथ देखूं ।

मै अकथु न कथना जाई ॥

मेरे से अकथ नहीं कथा जाता ।

जो तुधु भावै सोई आखा

जो तुझे भाता है वह ही मैं कहता हूँ

तिलु तेरी वडिआई ॥३॥

और तनिक भर मैं तुम्हारी बड़ाई नहीं कर सकता ।

एते कूकर हउ बेगाना

इतने कुत्ते हैं मैं कुत्ता तो बेगाना हूँ

भउका इसु तन ताई ॥

परन्तु मैं कुत्ता तो इस शरीर के विकारों को भौंकता हूँ।

भगति हीणु नानकु जे होइगा

मैं दास जो भक्ति के बिना भी हो जाऊंगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

तब मेरे स्वामी का नाम तो नहीं जाता रहेगा।

बिलावलु महला १ ॥

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु

मन मन्दिर है और शरीर कलंदरों का वेष है

घट ही तीरथि नावा ॥

मैं मन मन्दिर ही तीर्थ स्नान करता हूं।

एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है

एक गुरु उपदेश मेरे प्राणों में वास करता है।

बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥

इस करके मैं पुनः जन्म में नहीं आऊंगा।

मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥

मेरा मन दयाल के साथ बन्धा है। हे मेरी माता(माया)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कउणु जाणै पीर पराई ॥

पराया दुःख कौन जानता है ?

हम नाही चिंत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

हमें तो पराई चिन्ता ही नहीं है ।

अगम अगोचर अलख अपारा

जो परे से परे है बड़े से बड़ा है

चिंता करहु हमारी ॥

वही हमारी चिन्ता करेगा ।

जलि थलि महीअलि भरिपुरिलीणा

मालिक सब स्थानों में पूर्ण है

घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥

प्रत्येक जीव में उसकी शक्ति है ।

सिख मति सब बुधि तुम्हारी

सब सिख, मति, अकल तेरी बखशिश है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंदिर छावा तेरे ॥

इस शरीर को भी तेरी छाया है।

तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा

हे स्वामी मैं तेरे बिना और किसी को नहीं जानता

गुण गावा नित तेरे ॥३॥

मैं तो तेरे ही गुण गाता हूं।

जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी

यह सब जीव आप की शरण हैं

सरब चिंत तुधु पासे ॥

सब की चिन्ता तुम्हें ही है।

जो तुधु भावै सोई चंगा

जो तुझे भाता है वही उत्तम है।

इक नानक की अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरी तो यह प्रार्थना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

परमात्मा सत्य है गुरुओं की कृपा से मिलता है।

जापु

तिस का जाप करो

श्री मुखवाक पातिसाही १०॥

श्री दशम पातशाह जी की उचरी हुई बाणी

छपै छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

छे तुका छन्द। आप की कृपा रहे।

चक्र चिहन अरु बरन जाति

जहां चिह्न, निशान, चार वर्ण, जाति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अरु पाति नहिन जिह ॥

तथा जाति की पंक्ति नहीं है।

रूप रंग अरु रेख भेख

उसका रूप, रंग, रेखा तथा वेष

कोऊ कहि न सकत किह ॥

कोई नहीं कह सकता कि कैसा है।

अचल मूरति अनभउ प्रकास

स्थिर मूर्ति स्वतः प्रकाश

अमितोजि कहिज्जै ॥

और बड़ा बली कहा है।

कोटि इंद्र इंद्राण

करोड़ों इन्द्रों के इन्द्र तथा

साहु साहाणि गणिज्जै ॥

पातशाहों के पातशाह से बड़ा गिना जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिभवण महीप सुर नर असुर

तीनों लोकों के राजे, देवते, मनुष्य, दैंत

नेत नेत बन तृण कहत ॥

और बन तथा तिनके भाव सभी बेअंत कहते हैं।

तव सरब नाम कथै कवन

तब तेरा लच नाम कौन वर्णन कर सकता है।

क्रम नाम बरनत सुमत ॥१॥

केवल वाच नाम ही सुमति से कहता हूँ।

भुजंग प्रयात छंद

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं कृपाले ॥

कृपालु तथा अकाल को नमस्कार है।

नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥

सुन्दर रूप वाले को नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥

जो वेषों और लेखों से परे है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अकाए ॥ नमसतं अजाए ॥३॥

जो स्थान और शरीर के बिना है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥

जो काटने तोड़ने से परे है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे ॥४॥

जो स्थान नाम से बिना है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥

जो कर्मों धर्मों नेमों से बिना है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥

जो नाम और घर से बिना है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥

जो विजय और भय के बिना है उसे नमस्कार है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥

जो गिराने बनाने के बिना है उसे नमस्कार है।

नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥

जो अनादि और गिणती बिना है उसे नमस्कार है।

नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥

जो अछेद और अगाध है उसे नमस्कार है।

नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥

जो काटा और तोड़ा नहीं जाता उसे नमस्कार है।

नमसतं उदारे ॥ नमसतं अपारे ॥८॥

जो दलेर और बेअन्त है उसे नमस्कार है।

नमसतं सु एके ॥ नमसत अनेके ॥

जो एक से अनेक रूपों वाला है उसे नमस्कार है।

नमसतं अभूते ॥ नमसतं अजूपे ॥६॥

जो पांच तत्वों और छल रहित है उसे नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं निरकरमे ॥ नमसतं निरभरमे ॥

नमस्कार है जो कर्मों और भ्रमों के बिना है।

नमसतं निरदेसे ॥ नमसतं निरभेसे ॥ १० ॥

नमस्कार है जो देश और वेष के बिना है।

नमसतं निरनामे ॥ नमसतं निरकामे ॥

नमस्कार है जो कर्म और नाम के बिना है।

नमसतं निरधाते ॥ नमसतं निरघाते ॥ ११ ॥

नमस्कार है जो दौड़ता और नाश नहीं होता।

नमसतं निरधूते ॥ नमसतं अभूते ॥

नमस्कार है जो धातुओं पंच तत्वों के बिना है।

नमसतं अलोके ॥ नमसतं असोके ॥ १२ ॥

नमस्कार है जो देखने और चाव के बिना है।

नमसतं निरतापे ॥ नमसतं अथापे ॥

नमस्कार है जो न तपता है न लिप्त होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं त्रिमाने॥नमसतं निधाने॥१३॥

तीन लोक मान्य गुण निधान को नमस्कार है।

नमसतं अगाहे ॥

जो गाहया नहीं जाता उसे नमस्कार है।

नमसतं अबाहे ॥

जो बाहया नहीं जाता उसे नमस्कार है।

नमसतं त्रिबरगे ॥

जो स्त्री,पुरुष और निपुंसक से परे है उसे नमस्कार है

नमसतं असरगे ॥१४॥

उस उत्पन्न करने वाले को नमस्कार है।

नमसतं प्रभोगे ॥

समस्त को भोगने वाले को नमस्कार है।

नमसतं सुजोगे ॥

जुड़े हुए को नमस्कार है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥१५॥

जो रंग और टूटने के बिना है उसे नमस्कार है ।

नमसतं अगंमे ॥ नमसतसतु रंमे ॥

अगम और सत् स्वरूप को नमस्कार है ।

नमसतं जलासरे ॥

समस्त के आसरे को नमस्कार है ।

नमसतं निरासरे ॥१६॥

उस निर आसरे को नमस्कार है ।

नमसतं अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥

उस जातपात से रहित को नमस्कार है ।

नमसतं अमजबे ॥

उस अनोखे स्वरूप वाले को नमस्कार है ।

नमसतसतु अजबे ॥१७॥

उस मतों के झगड़ों से रहित को नमस्कार है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अदेसं अदेसे ॥ नमसतं अभेसे ॥

उस देश वेष से रहित को नमस्कार है।

नमसतंनिरधामे॥नमसतंनिरबामे॥१८॥

उस घर और बाय से रहित को नमस्कार है।

नमो सरब काले ॥ नमो सरब दिआले॥

हर समय सब पर दयालु को नमस्कार है।

नमो सरब रूपे ॥ नमो सरब भूपे ॥१६॥

उस सुन्दर स्वरूप नृप को नमस्कार है।

नमो सरब खापे ॥ नमो सरब थापे ॥

सब का नाश करता है और बनाता भी है।

नमो सरब काले॥नमो सरब पाले॥२०॥

उस बनाने और नाश करने वाले को नमस्कार है।

नमसतसतु देवे ॥ नमसतं अभेवे ॥

जिस का भेद नहीं उस सत् देव को नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतंअजनमे॥नमसतंसुबनमे॥२१॥
उस अजन्मा को नमस्कार है।
नमो सरब गउने॥नमो सरब भउने॥
सब जगह घूमने फिरने वाले को नमस्कार है।
नमो सरब रंगे॥ नमो सरब भंगे॥२२॥
उस आनन्द स्वरूप और नाशवान को नमस्कार है।
नमोकाल काले॥नमसतसतु दिआले॥
उस काल के काल और परम दयालु को नमस्कार है
नमसतं अबरने॥नमसतं अमरने॥२३॥
जो वर्णन से बाहर और अमर हैं उसे नमस्कार है
नमसतं जरारं॥ नमसतं क्रितारं॥
जो अजर और सब का कर्ता है उसे नमस्कार है।
नमो सरब धंधे॥ नमोसतअबंधे॥२४॥
जो सब धन्धों बन्धनों से रहित है उसे नमस्कार है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसतं निरसाके ॥ नमसतं निरबाके ॥

जो सगे सम्बन्धियों के भय से परे है उसे नमस्कार है

नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥२५॥

उस दयालु और कृपालु को नमस्कार है।

नमसतं अनंते ॥ नमसतं महंते ॥

इस के अन्त और महन्त को नमस्कार है।

नमसतसतु रागे ॥

इस प्रेम करने वाले को नमस्कार है।

नमसतं सुहागे ॥२६॥

उस सुहाग रूप को नमस्कार है।

नमो सरब सोखं ॥ नमो सरब पोखं ॥

सब सुखाने और पालने वाले को नमस्कार है।

नमो सरब करता ॥

सब के कर्ता को नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो सरब हरता ॥२७॥

उस सब के हरता को नमस्कार है।

नमो जोग जोगे ॥ नमो भोग भोगे ॥

उस योगियों के योगी भोगियों के भोगी को नमस्कार है

नमो सरब दिआले ॥

उस सब पर दयालु को नमस्कार है।

नमो सरब पाले ॥२८॥

उस पालना कर्ता को सदा २ नमस्कार है।

चाचरी छन्द ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥

निराकार अत्यन्त सुन्दर है।

अजू हैं ॥ अभू हैं ॥२६॥

अजन्म और किसी से जुड़ा हुआ भी नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥

लेखों (हिसाब) और वेष से रहित है ।

अनाम हैं ॥ अकाम हैं ॥३०॥

नाम और कर्म से रहित है ।

अधे हैं ॥ अभे हैं ॥

ध्यान और भेद से परे है ।

अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥३१॥

तू अजीत, निरभय और प्रकाश वान हैं

त्रिमान हैं ॥ निधान हैं ॥

सर्व निधान है जिस करके तीनों लोक मानते हैं ।

त्रिबरग हैं ॥ असरग हैं ॥ ३२ ॥

तीनों गुण रूप और अचल है ।

अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥

गिनती से परे अनादि है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥३३॥

जीता नहीं जाता और स्वतन्त्र है ।

अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥

जन्म मृत्यु और पांचों तत्वों से रहित है ।

अभूत हैं ॥ अभरन हैं ॥३४॥

सब में सुन्दर भूषण हैं ।

अगंज हैं ॥ अभंज हैं ॥

तू कटने और टूटने से रहित है ।

अझूझ हैं ॥ अझंझ हैं ॥३५॥

लड़ाई झगड़ों से भी रहित है ।

अमीक हैं ॥ रफीक हैं ॥

गहरा और सब का प्रिय है ।

अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥३६॥

संशय और बन्धनों से रहित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निरबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥

तुझे न कोई बूझ सकता है और न समझ सकता है

अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥३७॥

काल के जाल से रहित हैं।

अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥

तुझे न कोई देख सकता है न तू कहीं जाता है।

अनंत हैं ॥ महंत हैं ॥३८॥

तू बेअन्त श्रोमणि सरदार हैं।

अलीक हैं ॥ निरसरीक हैं ॥

तू सब का मित्र हैं तेरा कोई शरीक नहीं।

निरलंभ हैं ॥ असंभ हैं ॥३९॥

आसरे से रहित स्वयं ही जन्मा हुआ हैं।

अगंम हैं ॥ अजंम हैं ॥

बेअन्त हैं जन्म से रहित हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥४०॥

पांच तत्वों से रहित तुझे कोई छू नहीं सकता।

अलोक हैं ॥ असोक हैं ॥

तू देखा नहीं जाता और अशोक हैं।

अकरम हैं ॥ अभरम हैं ॥४१॥

कर्म और भ्रम से रहित हैं।

अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥

अजीत और भय से रहित हैं।

अबाह हैं ॥ अगाह हैं ॥४२॥

बाहया और तूड़ी की भांति गाहया नहीं जाता।

अमान हैं ॥ निधान हैं ॥

तू किसी को नहीं मानता गुण निधान हैं।

अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥४३॥

तू अनेक से एक रूप हो जाता हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुजंग प्रयात छन्द ॥

नमो सरब माने ॥

सब तुझे नमस्कार करते और मानते हैं ।

समसती निधाने ॥

तू सब का खजाना हैं ।

नमो देव देवे ॥

देवते भी तुझे नमस्कार करते हैं ।

अभेखी अभेवे ॥४४॥

तू वेषों से रहित और अलेप हैं ।

नमो काल काले ॥

हे काल के काल तूझे नमस्कार है ।

नमो सरब पाले ॥

सब की पालना करने वाले तुझे नमस्कार है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो सरब गउणे ॥

सब जगह व्यापक हैं

नमो सरब भउणे ॥४५॥

सब स्थानों पर पहुंचने वाले तुझे नमस्कार है।

अनंगी अनाथे ॥ निरसंगी प्रमाथे ॥

तू अंगों से रहित गरीबों का राखा हैं।

नमो भान भाने ॥ नमो मान माने॥४६॥

तू सूर्यों का सूर्य है हर कोई तुझे आदर देता है।

नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥

चन्द्रमाओं के चन्द्रमा सूर्यों के सूर्य तुझे नमस्कार है

नमोगीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥४७॥

तू गायकों का गीत और संगीत की तान हैं।

नमो नृत्त नृत्ते ॥ नमो नाद नादे ॥

तू नृत्यकारों का नृत्य और नाद हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो पान पाने ॥ नमो बाद बादे ॥४८॥

तू झगड़ा करने वालों में नमस्कार योग्य हैं।

अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥

तू निराकार हैं समस्त स्वरूप हैं।

प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥४९॥

समस्त संसार की वस्तुएं तेरी हैं।

कलंकं बिना नेकलंकी सरूपे ॥

कहीं कलंक वाला और कहीं निशकलंक हैं।

नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥५०॥

हे राजों के राजे परम स्वरूप तुझे नमस्कार है।

नमो जोग जोगेस्वरं परम सिद्धे ॥

बड़ी मुक्ति वाले योगियों के योगी को नमस्कार है।

नमो राज राजेस्वरं परम बृद्धे ॥५१॥

बड़ी युक्ति वाले राजों के राजे को नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो सस्त्रपाणे ॥ नमो अस्त्रमाणे ॥

सब शस्त्रों के चलाने वाले को नमस्कार है ।

नमो परमगिआता॥नमो लोकमाता५२

तू जगत माता और जगत ज्ञाता हैं ।

अभेखी अभरमी ॥ अभोगी अभुगते ॥

तू भ्रम के बिना अभोगता हैं ।

नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ॥५३॥

बड़ी युक्ति वाले योगियों के योगी को नमस्कार है ।

मनो नित्त नाराइणे क्रूर करमे ॥

कठिन काम करने वाले को नित्य नमस्कार है ।

नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४॥

देवतों के धर्म पतित पावन को नमस्कार है ।

नमो रोग हरता नमो राग रूपे ॥

सब रोगों के नाश करने वाले प्रेम रूप को नमस्कार है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥५५॥

पातशाहों के पातशाह राजों के राजे को नमस्कार है

नमो दान दाने नमो मान मानं ॥

दानियों में दानी और परम आदरणीय है।

नमो रोग रोगे नमसतं इसनानं ॥५६॥

रोगियोंके रोगदूर कर पवित्र करनेवाले को नमस्कारहै

नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो जंत्र जंत्रं ॥

मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र रूप को नमस्कार है।

नमो इसट इसटे ॥ नमो तंत्र तंत्रं ॥५७॥

महान पूजकों के पूजक को नमस्कार है।

सदा सचदानंद सरबं प्रणासी ॥

तू सचदानन्द ब्रह्म स्वरूप हैं।

अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥५८॥

तू सुन्दर स्वरूप सब में निवास करने वाला हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदा सिद्धदा बुद्धदा बृद्ध करता ॥

सब रिद्धियों सिद्धियों के करने वाला हैं।

अधो उरध अरधं

तू आदि अन्त और मध्य हैं।

अघं ओघ हरता ॥५६॥

तू सर्व पापों का हरता हैं।

परं परम परमेस्वरं प्रोछपालं ॥

तू परम परमेश्वर लुक छिप कर पालना कर्ता हैं।

सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ॥६०॥

तू सब सिद्धियों का दाता और दयाल हैं।

अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥

आप छेद भेद और काम से रहित हो।

समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

सब को उत्पन्न करने वाले आप ही हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥

जले हैं॥थले हैं॥अभीत हैं॥अभे हैं॥६२॥

तू जल थल में निरभय विराजमान हैं।

प्रभू हैं॥अजू हैं॥अदेस हैं॥अभेस हैं॥६३॥

जुड़ने से बिना देश वेष से रहित हैं।

भुजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे ॥

वे अन्त बन्धनों से रहित आनन्द स्वरूप हैं।

नमो सरब माने॥समसती निधाने॥६४।

आप सर्व मान्य और सर्व निधान हो।

नमसत्वं निरनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥

कोई तेरा स्वामी नहीं तू सब हंता हैं।

नमसत्वं अगंजे॥नमसत्वं अभंजे ॥६५॥

तोड़ा काटा और मरोड़ा नहीं जाता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥

अकाल और पालना से रहित को नमस्कार है।

नमो सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥६६॥

सब देश और वेष रूप को नमस्कार है।

नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥

राजों के राजे और साजों के साजे को नमस्कार है

नमो शाह शाहे ॥ नमो माह माहे ॥६७॥

पातशाहों के पातशाह चन्द्रमाओं के चन्द्रमा हो।

नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥

गीतों के गीत और प्रेमियों के प्रेम को नमस्कार है।

नमो रोख रोखे ॥ नमो सोख सोखे ॥६८॥

क्रोधियों में, क्रोध सुखाने वालों में सुखाना तुम हो।

नमो सरब रोगे ॥ नमो सरब भोगे ॥

सर्व रोग और भोग को नमस्कार है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो सरब जीतं॥नमो सरब भीतं॥६९॥

सब को जीतने वाले निडर को नमस्कार है।

नमो सरब गिआनं॥नमो परम तानं॥

ज्ञानवान और परम शक्तिमान हैं।

नमो सरब मंत्रं॥नमो सरब जंत्रं॥७०॥

सब यन्त्रों मन्त्रों में वास करने वाले को नमस्कार है

नमो सरब द्रिस्सं॥नमो सरब क्रिस्सं॥

सब में उत्तम दीखने वाले को नमस्कार है।

नमो सरब रंगे॥त्रिभंगी अनंगे॥७१॥

सब में आनन्द स्वरूप अनंग को नमस्कार है।

नमो जीव जीवं॥नमो बीज बीजे॥

जीवों के जीव और बीज को नमस्कार है।

अखिज्जे अभिज्जे॥समसतं प्रसिज्जे७२

ना भीगने न पसीजने वाला सब में मिला हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रिपालं सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी ॥

क्रपालु और बुरे कर्मों को नाश करने वाला हैं।

सदा सरबदा रिद्धिसिद्धं निवासी॥७३॥

सब रिद्धियां सिद्धियां तेरे में हैं।

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अमृत्त करमे ॥ अबृत्त धरमे ॥

सारे कर्म धर्म जोग भोग तेरे मीठे और

अखल जोगे ॥ अचल भोगे ॥७४॥

सदा रहने वाले अडोल हैं।

अचल राजे ॥ अटल साजे ॥

सारे तेरे राज साज

अखल धरमं ॥ अलक्ख करमं ॥७५॥

कर्म धर्म आराम से स्थिर हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरबं दाता ॥ सरबं गिआता ॥

सब का दाता और जानने वाला हैं ।

सरबं भाने ॥ सरबं माने ॥७६॥

सब में तेरी प्रसिद्धता है ।

सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥

सब का प्राणाधार शक्तिमान हैं ।

सरबं भुगता ॥ सरबं जुगता ॥७७॥

सब युक्तियों मुक्तियों वाला आप हैं ।

सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥

सब देवतों का भेद जानने वाला

सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

काल रूप स्वयं सब का पालक हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रिपालं सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी ॥

क्रिपालु और बुरे कर्मों को नाश करने वाला हैं।

सदा सरबदा रिद्धिसिद्धं निवासी॥७३॥

सब रिद्धियां सिद्धियां तेरे में हैं।

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अमृत्त करमे ॥ अबृत्त धरमे ॥

सारे कर्म धर्म जोग भोग तेरे मीठे और

अखल्ल जोगे ॥ अचल्ल भोगे ॥७४॥

सदा रहने वाले अडोल हैं।

अचल्ल राजे ॥ अटल्ल साजे ॥

सारे तेरे राज साज

अखल्ल धरमं ॥ अलक्ख करमं ॥७५॥

कर्म धर्म आराम से स्थिर हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरबं दाता ॥ सरबं गिआता ॥

सब का दाता और जानने वाला हैं।

सरबं भाने ॥ सरबं माने ॥७६॥

सब में तेरी प्रसिद्धता है।

सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥

सब का प्राणाधार शक्तिमान हैं।

जरबं भुगता ॥ सरबं जुगता ॥७७॥

सब युक्तियों मुक्तियों वाला आप हैं।

सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥

सब देवतों का भेद जानने वाला

सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

काल रूप स्वयं सब का पालक हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति

तुम आदि रूप और अनादि मूर्ति हो

अजोनि पुरख अपार ॥

तेरी मूर्ति अपार है।

सरब मान त्रिमान देव

तीनों लोक और देवता तुझे मानते हैं

अभेव आदि उदार ॥

देवता भी तेरे आदि उदार का भेद नहीं ले सकते।

सरब पालक सरब घालक

सब को पालने और नाश करने वाला।

सरब को पुनि काल ॥

और सब का पालन रूप हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जत्र तत्र बिराजही

सब स्थानों में विराजमान हो

अवधूत रूप रसाल ॥७६॥

बहुत मीठे और सुन्दर स्वरूप वाले !

नाम ठाम न जाति जाकर

नाम स्थान और जाति भी आप की कोई नहीं

रूप रंग न रेख ॥

आप का न कोई रूप है न रंग ।

आदि पुरख उदार मूरति

आदि पुरुष और उदार मूर्ति हो

अजोनि आदि असेख ॥

बेअन्त और आदि काल से हो ।

देस और न भेस जाकर

देश और वेश जिसका कोई नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूप रेख न राग ॥

रूप रंग से रहित है ।

जत्र तत्र दिसा विसा हुइ

जिधर किधर दशों दिशाओं में है ।

फैलिओ अनुराग ॥८०॥

प्रेमी होकर फैला हुआ है ।

नाम काम बिहीन पेखत

जिसे नाम काम के बिना देखा है ।

धाम हूं नहि जाहि ॥

जिस का कोई भी घर नहीं है ।

सरब मान सरबत्र मान

सब स्थानों में उसे सब मानते हैं ।

सदैव मानत ताहि ॥

हर समय उसकी मानता होती है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक मूरति अनेक दरसन

एक मूर्ति में अनेक दर्शन हैं

कीन रूप अनेक ॥

जो उस ने अनेकों रूप किये हुये हैं।

खेल खेल अखेल खेलन

न खेले जाने वाली खेलों को खेल २ कर

अंत को फिरि एक ॥८१॥

अन्त में वह पुनः एक रूप ही है।

देव भेव न जानही

जिस के भेद को देवता भी नहीं जान सके

जिह बेद अउर कतेब ॥

वेद कतेब भी नहीं जान सके।

रूप रंग न जाति पाति

जिस का रूप रंग जाति पांति और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सु जानई किंह जेव ॥

किस प्रकार की शोभा है कुछ पता नहीं ।

तात मात न जात जाकर

जिस का किसी प्रकार मातपिता नहीं जाना जाता

जनम मरन बिहीन ॥

वह जन्म मृत्यु से रहित है ।

चक्र बक्र फिरै चतुर चक्र

जिस का न मोड़ा जाने वाला हुकम

मानही पुर तीन ॥८२॥

सब जगत में घूमता है तीनों लोक उसे मानते हैं ।

लोक चौदह के बिखै

चौदह लोकों में

जग जापही जिंह जाप ॥

सब जिस का जाप जपते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि देव अनादि मूरति

वह आदि देव और अनादि मूर्ति है

थापिओ सबै जिह थापि ॥

जिस ने समस्त जगत रचा हुआ है।

परम रूप पुनीत मूरति

वह परम स्वरूप और पवित्र मूर्ति वाला है

पूरन पुरख अपार ॥

बड़ों से बड़ा वह अकाल पुरुष पूर्ण रूप है।

सरब बिस्व रचिओ सुयंभव

ख्याल से ही उस ने समस्त जगत रचा है

गड़न भंजनहार ॥८३॥

वह बनाने और नाश करने वाला है।

कालहीन कला संजुगति

मृत्यु के बिना सब शक्तियां सम्पूर्ण हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकाल पुरख अदेस ॥

उस अकाल पुरुष को नमस्कार है ।

धरम धाम सु भरम रहित

जिस का धर्म और धाम भ्रम से रहित है

अभूत अलख अभेस ॥

पांच तत्व और वेष देखा नहीं जाता ।

अंग राग न रंग जाकहि

शरीर के अंगों और रंगों से रहित है

जाति पाति न नाम ॥

उस की जाति पांति और नाम नहीं ।

गरब गंजन दुसट भंजन

सब को तोड़ने फोड़ने वाला है

मुकति दाइक काम ॥८४॥

और जिस का काम सब को मुक्ति देना है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आप रूप अमीक अन उसतति

वह स्वयं स्वरूप उस्तत से रहित है

एक पुरख अवधूत ॥

वह एक पुरुष अवधूत है ।

गरब गंजन सरब भंजन

सब को तोड़ने फोड़ने वाला है

आदि रूप असूत ॥

आदि रूप मर्यादा रहित है ।

अंग हीन अभंग अनातम

शरीर के अंगों के बिना आत्म निरलेप है ।

एक पुरख अपार ॥

वह अपार पुरुष एक स्वरूप है ।

सरब लाइक सरब घाइक

सब में चतुर और सब को नाश करने वाला है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरब को प्रतिपार ॥८५॥

सब का पालन भी है।

सरब गंता सरब हंता

सब जगह पहुंचने वाला सब का नाश करने वाला।

सरब ते अनभेख ॥

सब वेषों से परे है।

सरब सास्त्र न जानही

सब शास्त्र नहीं जानते

जिह रूप रंगु अरु रेख ॥

जिस रूप रंग और रेखा को।

परम बेद पुराण जाकहि

बड़े वेद और पुराण जिसे

नेत भाखत नित्त ॥

नित्य वेअन्त कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोटि सिंमृत पुरान सास्त्र

करोड़ों स्मृतियां पुराण और शास्त्रों

न आवई वहु चित्त ॥८६॥

के भी ध्यान में नहीं आते।

मधुभार छन्द ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥

बहुत गुणों वाला है उसकी अपार बड़ाई है।

आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥८७॥

आसन टिका हुआ है अंगों की उपमा नहीं है।

अनभउ प्रकास ॥ निसदिन अनास ॥

उसका प्रकाश रात दिन किसी प्रकार नाश नहीं होता।

आजान बाहु ॥ साहान साह ॥८८॥

उसकी लम्बी भुजायें हैं पातशाहों का पातशाह है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजान राज ॥ भानान भान ॥

राजों का राजा और सूर्यों का सूर्य है।

देवान देव ॥ उपमा महान ॥८६॥

देवताओं का देवता है उसकी बड़ाई महान है।

इंद्रान इंद्र ॥ बालान बाल ॥

इन्द्रों का इन्द्र और महा बलवान है।

रंकान रंक ॥ कालान काल ॥६०॥

दीनों का दीन काल का काल है।

अनभूत अंग ॥ आभा अभंग ॥

अंग पांचों तत्वों से रहित, शोभा नाश नहीं होती।

गतिमिति अपार॥गुनगन उदार॥६१॥

उसकी मर्यादा अपार है गुण बेअन्त हैं।

मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥

मुनिगण प्रणाम करते हैं वह निरभय निष्काम है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतिदुतिप्रचंड॥मितिगतिअखंड ॥६२॥

वह अत्यन्त प्रचंड और गति मति अखंड है।

आलिस्य करम ॥ आदृस्य धरम ॥

आलस्य कर्म से रहित और धर्म गुप्त है।

सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥६३॥

गहना रूप आसरा है कोई दण्ड नहीं दे सकता।

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे॥६४॥

धरती का स्वामी मुक्ति दाता और दलेर है।

हरीअं॥करीअं॥निरनामे॥अकामे ॥६५॥

हरे करने वाला नाम काम बिना शोभता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुयंग प्रयात छंद

चतर चक्र करता ॥ चतर चक्र हरता ॥

चारों ओर का कर्ता और हर्ता है।

चतर चक्र दाने ॥ चतर चक्र जाने ॥६६॥

चारों ओर में चतुर जानते हैं।

चतर चक्र वरती ॥ चतर चक्र भरती ॥

चारों ओर में रमा और उत्पन्न करने वाला है।

चतर चक्र पाले ॥ चतर चक्र काले ॥६७॥

चारों ओर को पालता और मारता है।

चतर चक्र पासे ॥ चतर चक्र वासे ॥

चारों ओर के पास २ वास करता है।

चतरचक्रमानयै॥चतरचक्रदानयै ॥६८॥

चारों ओर में माना जाता है और दानी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाचरी छंद ॥

न सत्रै॥नमित्रै॥नभरमं॥न भित्रै ॥६६॥

उसका कोई शत्रु मित्र नहीं वह निडर है।

न करमं॥न काए॥अजनमं॥अजाए॥१००।

न अच्छे बुरे कर्म न देह न स्थान है।

न चित्रै ॥न मित्रै ॥परे हैंपवित्रै ॥१०१॥

चित्रकार नहीं मित्रता नहीं परे और पवित्र है।

पृथीसै॥अदीसै।॥अद्दसै॥अकृसै ॥१०२॥

धरती का ईश है न दीखता है न कहा जाता है।

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै॥कि आभिज्ज भेसै॥

देश नाम बिना है भेस मिलने के बिना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि आगंज्जकरमै। किआभंज्जभरमै १०३

कर्मों का नाश करने वाला भ्रमों को तोड़ता है।

कि आभिज्ज लोकै।। कि आदित्त सोकै।।

संसार से पृथक है सुखाने को सूर्य है।

कि अवधूत बरनै।।किबिभूतकरनै १०४

शुद्ध वर्णन और संसार का कर्ता है।

कि राजं प्रभा हैं।। कि धरमं धुजा हैं।।

राजों जैसी शोभा है धर्म का झण्डा है।

कि आसोकबरनै।कि सरबाअभरनै।१०५

चिंता से रहित और सबमें समाया हुआ है।

कि जगतं कृती हैं।। कि छत्रं छत्री हैं।

संसार का कर्ता क्षत्रियों का क्षत्री है।

कि ब्रह्मं सरूपै।।कि अनभउ अनूपै।१०६

स्वामी रूप है भय से रहित सुन्दर है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि आदि अदेव हैं ॥कि आपिअभेव हैं।

दैत्यों का काल और भेद से रहित है।

कि चित्रं बिहीनै ॥कि एकै अधीनै १०७

चित्रकारी में नहीं आ सकता एक भक्तों के आधीन है।

कि रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥

रोज़ी देने वाला तरस और मुक्ति कराने वाला है।

क पाक बिऐब हैं ।कि ग़ैबुल ग़ैबहैं १०८

पवित्र दोशों से रहित गुप्तों से भी गुप्त है।

किअफूअलगुनाहहैं ।किशाहानशाहहैं।

गुनाहों को बख्शता है पातशाहों का पातशाह है।

किकारनकुनिंदहैं ।किरोज़ीदहिंदहैं १०६

कर्मों का कारण और रोज़ी देने वाला है।

कि राज़क रहीम हैं ।कि करमं करीमहैं।

अन्न दाता और देन देने वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि सरबं कली हैं। कि सरबं दली हैं।११०

सब का काल और मारने वाला है।

कि सरबत्र मानियै॥ कि सरबत्र दानियै॥

हर स्थान पर माना जाता है सब में चतुर है।

कि सरबत्र गउनै। कि सरबत्र भउनै।१११

सब में आता जाता है।

कि सरबत्र देसै॥ कि सरबत्र भेसै॥

सब देशों भेषों वाला है।

कि सरबत्र राजै॥ कि सरबत्र साजै।११२

और सब राजों का साज बनाने वाला है

कि सरबत्र दीनै॥ कि सरबत्र लीनै॥

सब पदार्थ देता है और फिर छीन लेता है।

कि सरबत्र जाहो। कि सरबत्र भाहो।११३

हर जगह जाता है और तेज प्रताप वाला है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥

सब देशों और वेषों वाला है।

कि सरबत्र कालै॥कि सरबत्र पालै॥११४

सब का काल और पालक है।

कि सरबत्र हंता ॥ कि सरबत्र गंता ॥

सब का हर्ता और सब जगह गमन करता है।

कि सरबत्र भेखी॥कि सरबत्र पेखी॥११५

सब वेषों और कर्मों को देखता है।

कि सरबत्र काजै ॥ कि सरबत्र राजै॥

सब कर्मों को करने वाला राजा है।

कि सरबत्र सोखै॥कि सरबत्र पोखै॥११६

सब को मारने और पालने वाला है।

कि सरबत्र त्राणै॥कि सरबत्र प्राणै॥

सब का ज़ोर प्राण हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि सरबत्र देसै॥कि सरबत्र भेसै।११७।

तेरे समस्त देश वेष हैं।

कि सरबत्र मानियैं॥सदैवं प्रधानियैं॥

सब मानते हैं तू सब में प्रधान हैं।

कि सरबत्रजापियै कि सरबत्राथापियै ११८

सब तुझे जपते हैं और सब को आराम देता हैं।

कि सरबत्र भानै ॥ कि सरबत्र मानै॥

सारे तुझे सूर्य स्वरूप मानते हैं।

कि सरबत्र इंद्रै ॥कि सरबत्रचंद्रै ॥११६।

तू सब का इंद्र और चंद्रमा हैं।

कि सरबं कलीमै॥ कि परमं फ़हीमै॥

सब बोलियां बोलने वाला बहुत चतुर हैं।

किआकलअलामै।किसाहिबकलामै१२०

समस्त जगत में बुद्धि और वाणी वाला हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि हुसनल वजू हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥

सुन्दर रूप और सब में समाया हुआ है ।

हमेसुल सलामैं ॥ सलीखत मुदामैं ॥ १२१ ॥

सदा सलामत है ।

ग़नीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥

शत्रुओं को हराता और मित्रों की पालना करता है ।

बलंदुल मकानैं ॥ ज़मीनुल ज़मानैं ॥ १२२

बड़े मकान वाला पृथ्वी और अकाश का कर्ता है ।

तमीज़ुल तमामैं ॥ रुजूअल निधानैं ॥

सब में बुद्धिमान और खज़ानों का स्वामी है ।

हरीफुल अज़ीमैं ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥ १२३

बड़ा मित्र है और अन्न का दाता है ।

अनेकुल तरंग हैं ॥ अभेद हैं अभंग हैं ॥

तेरे अनेकों ख़्याल हैं भेद और नाश से रहित हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अज़ीज़ुल निवाज़ हैं ॥

मित्रों को आराम देता है।

ग़नीमुल खिराज हैं ॥ १२४ ॥

शत्रुओं को छीलता है।

निरुकत सरूप हैं ॥ त्रिमुकति बिभूत हैं॥

तेरा रूप अकथ है दुनिया और विभूति से रहित है।

प्रभुगति प्रभा हैं॥सजुगति सुधा हैं॥१२५

तेरी शोभा का कोई नाश नहीं कर सकता।

सदैवं सरूप हैं ॥ अभेदी अनूप हैं ॥

सदैव रहने वाला रूप है अभेद और अनूप है।

समसतोपराज हैं ॥

सब को उत्पन्न करता है

सदा सरब साज हैं ॥१२६॥

बनाने वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समसतुल सलाम हैं ॥

सारे स्थिर (सलामत) हैं ।

सदैवल अकाम हैं ॥

लोड़ से रहित है ।

निरबाध सरूप हैं। अगाध हैं अनूप हैं १२७

नाश से रहित और बेअन्त सुन्दर हैं ।

ओअं आदि रूपै ॥ अनादि सरूपै ॥

अनादि रूप और अनादि सरूप है ।

अनंगी अनामे ॥

बिना अंगों से नाम के बिना है ।

त्रिभंगी त्रिकामे ॥ १२८ ॥

त्रभंगी और इच्छा से रहित है ।

त्रिबरगं त्रिबाधे ॥

तीनों गुणों वाला और नाश से रहित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अगंजे अगाधे ॥

न टूटने वाला बेअंत है ।

सुभं सरब भागे ॥

पवित्र सब भागों वाला है ।

सु सरबा अनुरागे ॥ १२६ ॥

प्रेम करता है ।

त्रिभुगत सरूप हैं ॥

तीनों लोकों के पदार्थों को खाने वाला है ।

अछिज्ज हैं अछूत हैं ॥

नाश से रहित और छूने से परे है ।

कि नरकं प्रणास हैं ॥

नरक का नाश करने वाला है ।

पृथीउल प्रवास हैं ॥ १३० ॥

धरती आकाश में वास करता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निरुकति प्रभा हैं ॥

शोभा के कथन से परे है।

सदैवं सदा हैं ॥

सदा प्रकाशक है।

बिभुगति सरूप हैं ॥

भोगने वाला है।

प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३१ ॥

युक्तियों वाला सुन्दर है।

निरुकति सदा हैं ॥

कथन बिना और

बिभुगति प्रभा हैं ॥

भोगने से रहित है।

अनउकति सरूप हैं ॥

अन्यों के कथन से रहित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३२ ॥
युक्तियों वाला और सुन्दर है।

॥ चाचरी छंद ॥
अभंग हैं ॥ अनंग हैं ॥
नाश नहीं होता और अंगों से रहित है।
अभेख हैं ॥ अलेख हैं ॥१३३॥
वेष और लेख से रहित है।
अभरम हैं ॥ अकरम हैं ॥
भ्रम और कर्म से रहित है।
अनादि हैं ॥ जुगादि हैं ॥ १३४ ॥
अनादि और जुगादि है।
अजै हैं ॥ अबै हैं ॥
जीतने और भेद से रहित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभूत हैं ॥ अधूत हैं ॥१३५॥

पाँच तत्वों से रहित और स्वरूप है।

अनास हैं ॥ उदास हैं ॥

आशा से रहित और उदास है।

अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥ १३६॥

धन्धों और बन्धनों से रहित है।

अभगत हैं ॥ बिरकत हैं ॥

किसी का प्रेमी नहीं त्यागी स्वरूप है।

अनास हैं ॥ प्रकास हैं ॥ १३७ ॥

नाश से रहित प्रकाशक है।

निचिंत हैं ॥ सुनिंत हैं ॥

नित्य निश्चिन्त है।

अलिक्ख हैं ॥ अदिक्ख हैं ॥१३८॥

लेखे और देखने से रहित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥

लेख और वेष से बिना है।

अढाह हैं ॥ अगाह हैं ॥ १३६॥

गिराया और हटाया नहीं जाता ।

असंभ हैं ॥ अगंभ हैं ॥

आप ही जन्मा और गर्भ से रहित है ।

अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥ १४० ॥

अनगिन्त और अनादि हैं।

अनित्त हैं ॥ सुनित्त हैं ॥

अनित और सुनित है ।

अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥ १४१ ॥

जन्मा हुआ नहीं स्वतन्त्र है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥

सबका हर्ता और सबका पूज्य है।

सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ।१४२।

सब में विख्यात और सब का ज्ञाता है।

सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥

सब का हर्ता और कर्ता है।

सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥ १४३ ॥

सब के प्राण और शक्ति है।

सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥

सब कर्म धर्म चलाने वाला है।

सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥१४४॥

सब युक्तियों मुक्तियों वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥

नरक को नाश करने वाले प्रकाश मय हैं ।

अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥१४५॥

अंगों से रहित और समस्त विभूतियों वाले हैं ।

प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥

परम परमार्थी और सबका साथी है ।

अगाध सरूपे ॥ निरबाध बिभूते ।१४६।

आगाध स्वरूप और अमर विभूषित है ।

अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥

अंगों से रहित और त्रिभंगी है ।

निरभंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे।१४७।

नाश रहित और सबका प्रेमी है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥

वह पुत्र पौत्रों शत्रुओं और मित्रों से रहित है।

न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ।१४८।

माता पिता और जाति पांति से रहित है।

निरसाकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥

सम्बन्धियों से रहित और गम्भीर है।

सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा हैं ।१४९।

सदा शोभा और विजय से रहित है।

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर हैं ॥

प्रगट तेज है।

कि हाज़र हज़ूर हैं ॥

निकट से निकट है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमेसुल सलाम हैं ॥

सदा सलामत है ।

समसतुल कलाम हैं ॥ १५० ॥

अमर वाणी है ।

कि साहिब दिमाग़ हैं ॥

बड़े दिमाग़ वाला है ।

कि हुसनल चराग़ हैं ॥

सुन्दर स्वरूप है ।

कि कामल करीम हैं ॥

बड़ा कृपालु है ।

कि राज़क रहीम हैं ॥ १५१ ॥

दयावान और दाता है ।

कि रोज़ी दहिंद हैं ॥

अन्न का दाता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि राज़क रहिंद हैं ॥

अन्न दाता है।

करीमुल कमाल हैं ॥

बड़ा कृपालु है।

कि हुसनल जमाल हैं ॥ १५२ ॥

प्रकाशमय स्वरूप है।

ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥

शत्रुओं को छीलता है।

ग़रीबुल निवाज़ हैं ॥

दीनों को सुख देता है।

हरीफ़ुल शिकंन हैं ॥

शत्रुओं को हराता है।

हिरासुल फ़िकंन हैं ॥ १५३ ॥

पहलवानों को गिराने वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कलंकं प्रणास हैं ॥

दोशों के नाश करने वाला है।

समसतुल निवास हैं ॥

सब में निवास करता है।

अगंजुल गनीम हैं ॥

शत्रुओं को मारने वाला है।

रज़ाइक रहीम हैं ॥ १५४ ॥

अन्न का दाता है।

समसतुल जुबां हैं ॥

सदा जोबन वाला है।

कि साहिब किरां हैं ॥

वलायतों का स्वामी है।

कि नरकं प्रणास हैं ॥

नरकों के नाश करने वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहिसतुल निवास हैं ॥ १५५ ॥

स्वर्ग में निवास कर्ता है।

कि सरबुल गवंन हैं ॥

सब स्थानों में भ्रमण करता है।

हमेसुल रवंन हैं ॥

सदा ही व्यापक है।

तमामुल तमीज हैं ॥

सब सूझों वाला है।

समसतुल अजीज हैं ॥ १५६ ॥

तू सब का प्रेमी है।

परं परम ईस हैं ॥

बड़े से बड़ा स्वामि है।

समसतुल अदीस हैं ॥

सब को नहीं दीखता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अदेसुल अलेख हैं ॥

नमस्कार है तू लिखा नहीं जाता ।

हमेसुल अभेख हैं ॥१५७॥

सदा भेष बिना है ।

ज़मीनुल ज़मा हैं ॥

धरती आकाश सब

अमीकुल इमा हैं ॥

समयों में स्थित है ।

करीमुल कमाल हैं ॥

गम्भीर धर्म वाला कृपालु है ।

कि जुरअति जमाल हैं ॥ १५८ ॥

दलेर और प्रकाशक है ।

कि अचलं प्रकास हैं ॥

स्थिर प्रकाश है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि अमितो सुबास हैं ॥

बड़ी सुगन्धी वाला है।

कि अजब सरूप हैं ॥

सुन्दर रूप है।

कि अमितो बिभूत हैं ॥१५६॥

बड़ी सामग्री है।

कि अमितो पसा हैं ॥

बड़ा पसारा है।

कि आतम प्रभा हैं ॥

आत्मा की शोभा है।

कि अचलं अनंग हैं ॥

अस्थिर अंगों वाला है।

कि अमितो अभंग हैं ॥१६०॥

बड़ा नाश रहित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मनि प्रणाम ॥
मुनियों के मन नमस्कार करते हैं ।
गुनि गन मुदाम ॥
स्थित बहुत गुणों वाला है ।
अरि बर अगंज ॥
वीरों और शत्रुओं से नाश नहीं होता ।
हरि नर प्रभंज ॥१६१॥
सब नरों को नाश करता है ।
अन गन प्रनाम ॥
सब नमस्कार करते हैं ।
मुनि मनि सलाम ॥
मुनियों के मन नमस्कार करते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरि नर अखंड ॥

सब में निरन्तर है।

वर नर अमंड ॥१६२॥

वीर पुरुषों को बनाता है आप किसी से नहीं बनता

अनभव अनास ॥

प्रकट है नाश से रहित है।

मुनि मनि प्रकास ॥

मुनियों के मन का प्रकाश है।

गुनि गन प्रनाम ॥

अनेकों गुणी नमस्कार करते हैं।

जल थल मुदाम ॥१६३॥

जल थल में स्थिर है।

अनछिज्ज अंग ॥

अंग नाश रहित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसन अभंग ॥

उस का आसन नाश नहीं होता ।

उपमा अपार ॥

शोभा अपार है ।

गति मिति उदार ॥१६४॥

मर्यादा की मति का दलेर है ।

जल थल अमंड ॥

जल थल से नहीं बना ।

दिस विस अभंड ॥

सभ दिशाओं में उत्पन्न से रहित है ।

जल थल महंत ॥

हर जगह बड़ा है ।

दिस विस बिअंत ॥१६५॥

सब ओर बेअन्त रूप है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनभव अनास ॥

जन्म मृत्यु से रहित है।

धृत धर धुरास ॥

आरम्भ से ही पृथ्वी का आधार है।

आजान बाहु ॥ एकै सदाहु ॥१६६॥

लम्बी भुजाओं वाला सदा एक है।

ओअंकार आदि ॥ कथनी अनादि ॥

आदि अनादि काल से युद्ध रूप कहा है।

खलखंड खिआल ॥ गुरबर अकाल १६७

मूर्खों को नाश करने का विचार है काल से रहित है

घर घरि प्रनाम ॥ चित चरन नाम ॥

घर घर नमस्कार है, मन चरणों और नाम में लगा है।

अनछिज्ज गात ॥ आजिज न बात १६८

शरीर नाश नहीं होता दीनों की बातें सुनता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनभंभ गात ॥ अनरंज बात ॥

शरीर झगड़े के बिना बातें, क्रोध रहित हैं ।

अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥ १६६ ॥

न समाप्त होने वाला भंडार जो रुकता नहीं ।

आडीठ धरम ॥ अतिढीठ करम ॥

धर्म अदृष्य और कर्म भी अदृष्य हैं ।

अणबृण अनंत ॥ दाता महंत ॥ १७० ॥

अनन्त वर्णन से रहित बड़ा दाता है ।

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥ अरिघालय हैं ॥

कृपा का घर है । शत्रुओं को मारता है ।

खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥ १७१ ॥

मूर्खों का नाश करता है धरती का कर्ता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥

परमेश्वर जगत का स्वामी है।

कलिकारण हैं॥सरब उबारण हैं।१७२।

युगों को करने वाला और सब को बनाने वाला है।

धृत के धरण हैं ॥ जग के करण हैं ॥

धैर्य धारण करने वाला जगत का कारण रूप है।

मन मानिय हैं॥जग जानियहैं॥१७३॥

मन में माना है संसार ने जाना है।

सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं ॥

सब को भरने और करने वाला है।

सरब पासिय हैं॥सरब नासिय हैं॥१७४॥

सब के पास और सब का नाश करने वाला है।

करुणा कर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥

कृपा करने वाला और जगत को पालने वाला है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥१७५॥

सारे जगत का स्वामी है ।

ब्रह्मंडस हैं ॥ खलखंडस हैं ॥

ब्राह्मंड बनाने और मूर्खों को नाश करने वाला है ।

पर ते पर हैं ॥ करुणाकर हैं ॥१७६॥

परे से परे कृपा करने वाला है ।

अजपा जप हैं ॥ अथपा थप हैं ॥

उस का जाप जपा नहीं जाता अथपा है ।

अकृता कृत हैं ॥ अंमृता मृत हैं ॥१७७॥

वह किया नहीं जाता मीठे से मीठा है ।

अंमृता मृत हैं ॥ करुणा कृत हैं ॥

मीठे से मीठा कृपा करने वाला हैं ।

अकृता कृत हैं ॥ धरणी धृत हैं ॥१७८॥

किसी का किया हुआ नहीं धरती का आधार है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥

परमेश्वर बड़ा स्वामी है ।

अकृता कृत हैं॥ अमृता मृत हैं॥१७६॥

किसी का किया हुआ नहीं, अमर है ।

अजबा कृत हैं ॥ अमृता अमृत हैं ॥

बहुत सुन्दर बना है मृत्यु से रहित है ।

नर नाइक हैं ॥ खल घाइक हैं ॥१८०॥

मनुष्यों का स्वामी मूर्खों का नाश कर्ता है ।

बिस्वंभर हैं ॥ करुणालय हैं ॥

दुनिया को भरने वाला कृपा का घर है ।

नृप नाइक हैं॥ सरब पाइक हैं ॥१८१॥

नृपों के नृप सब तेरे दास हैं ।

भव भंजन हैं ॥ अरि गंजन हैं ॥

संसार को निडर और शत्रुओं का नाश करने वाला है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिपु तापन हैं ॥ जपु जापन हैं ॥१८२॥

शत्रुओं को ताप चढ़ाने वाले का नाम जपो ।

अकलं कृत हैं ॥ सरबा कृत हैं ॥

बुद्धि और सब कुछ करने वाला है ।

करता कर हैं ॥ हरता हरि हैं ॥१८३॥

करने और मारने वाला स्वयं ही है ।

परमातम हैं ॥ सरबातम हैं ॥

परमेश्वर रूप और सब जीवों का रूप है ।

आतम बस हैं॥जस के जस हैं ॥१८४॥

आत्मा में निवास करता है यश रूप है ।

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥

सूर्यों के सूर्य चन्द्रों के चन्द्र ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥

राजाओं के राजा इन्द्रों के इन्द्र को नमस्कार है।

नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥

गाढ़ अन्धकार और प्रकाश भी स्वयं है।

नमो बृंद बृंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥

महान् और बीजों के बोने वाला स्वयं है।

नमो राजसं तामसं सांत रूपे ॥

तीन गुणों और बड़े तत्वों वाला है।

नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे ॥

यह सब स्वरूप आप ही है।

नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने।

योगियों का योगी ज्ञानियों का ज्ञानी है।

नमो मंत्रमंत्रे नमो धिआनधिआने१८६

मन्त्रों का मन्त्र ध्यानियों का ध्यानी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन गिआने॥
युद्ध वालों में युद्ध वाला ज्ञानियों में ज्ञानी है।
नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥
भोजन वालों का भोजन और आज्ञा देने वाला है।
नमो कलह करता नमो सांत रूपे ॥
क्लेश और शांति करने वाला स्वयं है।
नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥
इन्द्रों का अनादि सामग्री वाला है।
कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥
कलंक से रहित और निरभय है।
नमो आस आसे नमो बांक बंके ॥
आशा वादियों की आशा और सुन्दर है।
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
स्वरूप अंग नाश और नाम बिना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे॥१८८

तीन पेच, तीन समय नहीं अंग तोड़ बिना हैं।

एक अछरी छंद॥

अजै॥ अलै॥ अभै॥ अबै॥१८९॥

अजीत, अभय अलय और अविनाशी है।

अभू॥ अजू॥ अनास॥अकास॥१९०

जन्म मृत्यु से रहित और अविनाशी है।

अगंज॥अभंज॥अलक्ख॥अभक्ख १९

गिनती बिना चलने दीखने और वेष बिना है।

अकाल॥दिआल॥अलेख॥अभेख १९

दयालु है अकाल लेख वेष बिना है।

अनाम॥अकाम॥अगाह॥अढाह॥१९३

नाम काम नहीं गिराया ढाया नहीं जाता।

अनाथे॥प्रमाथे॥अजोनी॥अमोनी १९

मालिक बिना मरता नहीं जन्म बिना चुप है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न रागे॥ न रंगे॥ न रूपे॥ न रेखे ॥१६५॥

राग रंग रूप रेख कुछ नहीं है।

अकरमं॥ अभरमं॥ अगंजे॥ अलेखे॥ १६६

कर्म भ्रम गन लेख कुछ नहीं है।

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥

सब नमस्कार करते हैं सब को नाश करता है।

अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥

रोग नाश से रहित सब में विराजमान है।

नेरकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥

बिना आवश्यकता सब सामग्री सर्व रूप है।

कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते॥१६७॥

बुरे कामों का नाशक धर्म विभूति है।

सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥

सदा सच्चदानन्द रूप शत्रुओं का नाश कर्ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥

कृपा करता है सब में निवास करता है।

अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥

सुन्दर सामग्री वाला शत्रुओं का नाशा है।

हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१६८॥

हरन भरन करन वाला कृपा सागर है।

चतर चक्र वरती चतर चक्र भुगते ॥

चौदह लोकों में रहता और नाश करता है।

सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥

हर प्रकार से सब युक्तियों का मालिक है।

दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥

दयाल रूप जन्म मृत्यु का नाश करने वाला है।

सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१६९॥

अपनों परायों के साथ रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शबद हज़ारे

पातशाही १० ॥

(दशम पातशाह जी के मुखवाक)

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वाहिगुरु एक है सच्चा है गुरुओं की कृपा से मि..ता है

रामकली पातशाही १० ॥

रामकली राग में दशम गुरु जी उचारते हैं ।

रेमन ऐसो कर संन्यासा ॥

रे मन एक का संन्यास कर ।

बन से सदन सभै कर समझहु

सारे घरों को जंगल समझ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥

मन करके संसार से पृथक रहो।

जत की जटा जोग को भजन

जत की जटा बना, योग का समान कर।

नेम के नखन बढाओ ॥

नीयम के नाखुन बढ़ा,

ग्यान गुरू आतम उपदेसहु

ज्ञान का गुरु हो, मन को उपदेश हो

नाम बिभूत लगाओ ॥१॥

नाम की विभूति शरीर को लगाई जाये।

अलप अहार सुलप सी निंद्रा

थोड़ा खाना थोड़ा सोना

दया छिमा तन प्रीति ॥

दया और त्तमा तन की प्रीत हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सील संतोख सदा निरबाहिबो

शीतल स्वभाव और सन्तोष का सदा निर्वाह करे

ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥२॥

इस प्रकार तीन गुणों से रहित हो।

काम क्रोध हंकार लोभ हठ

पांचों विषयों को

मोह न मन सिउ लिआवै ॥

मन के साथ न लगावे,

तब ही आतम तत को दरसै

तो मन अन्दर ही तत्वस्वरूप निरंकार को देख लेगा

परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

और उस प्रभु को पा लेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामकली पातशाही १० ॥

योग का उपदेश

रे मन इह बिधि जोग कमाओ ॥

रे मन इस प्रकार का योग कमा,

सिंङी साच अकपट कंठला

सच की सिंङी, कपट बिना माला,

धिआन बिभूत चड़ाओ॥१॥रहाउ ॥

ध्यान की विभूति चढ़ा।

ताती गहु आतम बसि कर की

मन को आधीन करने की तार पकड़ो।

भिछा नाम अधारं ॥

नाम का आसरा भिक्षा करो।

बाजै परम तार तत हरि को

बाजे में प्रभु को मिलने की तार पाओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपजै राग रसारं ॥१॥

फिर रस वाला राग उत्पन्न होगा।

उघटै तान तरंग रंग अति

प्रेम की लहरों वाली तार निकलेगी

गिआन गीत बंधानं ॥

ज्ञान के गाने की बन्धी हुई।

चकि चकि रहे देव दानव मुनि

इस आनन्द से सब देव हैरान हो जायेंगे,

छकि छकि बयोम बिवानं ॥२॥

विमानों में चढ़े हुए देवते प्रसन्न होंगे।

आतम उपदेस भेस संजम को

मन को उपदेश देना इन्द्रियों का रोकना,

जाप सु अजपा जापै ॥

यह वेष करना सदा जपने वाला जाप हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदा रहै कंचन सी काइआ

इस प्रकार सोने जैसी काया होगी,

काल न कबहूँ ब्यापै ॥३॥२॥२६॥

और मृत्यु कभी भी आकर नहीं छूयेगी ।

रामकली पातशाही १० ॥

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥

प्राणियों अकाल के चरणी लगो ।

सोवत कहा मोह निंद्रा मै

क्या मोह की नींद में सोते हो

कबहूं सुचित ह्वै जागो ॥१॥ रहाउ॥

कभी तो सावधान होकर जागो ।

औरन कहां उपदेसत है पसु

हे पशुओ औरों को क्या उपदेश देते हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोहि प्रबोध न लागो ॥

जब तुम्हें स्वयं ही ज्ञान नहीं हुआ है।

सिंचत कहां परे बिखियन कहिं

काहे को तुम विषयों को इकट्ठा करते हो

कबहूं बिखै रस त्यागो ॥१॥

कभी तो कड़वे रस को छोड़ो।

केवल करम भरम से चीनहु

इन कर्मों धर्मों को भ्रम समझो

धरम करम अनुरागो ॥

एक धर्म के कामों को प्रेम करो।

संग्रह करो सदा सिमरन को

हरि स्मरण का इकट्ठ करो

परम पाप तज भागो ॥२॥

बड़े छोटे पापों से दूर हट जाओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाते दूख पाप नहि भेटै

जिस करके तुम्हें दुःख पाप नहीं छूयेगा

काल जाल ते तागो ॥

और काल के जाल से भी बच जाओगे ।

जौ सुख चाहो सदा सभन कौ

जब तुम सदा सुख चाहते हो

तौ हरि के रस पागो ॥३॥३॥२७॥

तो हरि रस में मिल जाओ ।

रागु सोरठि पातशाही १० ॥

प्रभ जू तो कहि लाज हमारी ॥

हे मालक तू हमारी लज्जा रख ।

नील कंठ नर हरि नाराइण

तू नर सिंह जल में निवास करता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीलबसन बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥

नीले वस्त्रों वाले बनवासी हैं।

परम पुरख परमेस्वर स्वामी

हे प्रभु बड़े से बड़े

पावन पउन अहारी ॥

पवित्र वायु के खाने वाले।

माधव महा जोत मधु मरदन

हे लक्ष्मी पति बड़ी शक्ति वाले

मान मुकंद मुरारी ॥१॥

अहंकार के नाश कर्ता और मुक्ति दाता,

निरबिकार निरजुर निंद्रा बिन

और निरविकार अज्ञान नींद बिना,

निरबिख नरक निवारी ॥

विषयों से रहित नरक से दूर रखने वाले।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृपा सिंध काल त्रै दरसी

कृपा के सागर तीनों समयों के जानने वाले

कुकृत प्रणासन कारी ॥२॥

बुरे कर्मों के नाश करने वाले ।

धनुरपान धृतमान धराधर

धनुष धैर्य और धरती के धारण करने वाला

अनबिकार असि धारी ॥

बिना विकार तलवार धारी ।

हौ मति मंद चरण शरणागति

मैं बुरी मति वाला आपके चरणों की शरण आया हूँ ।

कर गहि लेहु उबारी ॥३॥४॥२८॥

मेरा हाथ पकड़ कर बचा लो ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राग कलिआणु पातशाही १० ॥

बिन करतार न किरतम मानो ॥

करतार के बिना किसी को कर्ता न मानो।

आदि अजोनि अजै अबिनासी

वह आदि अजूनी जीत के और मृत्यु से परे है

तिह परमेसर जानो ॥१॥ रहाउ ॥

इस प्रकार उसे जानो।

कहां भयो जो आन जगत मै

क्या जो संसार में आकर

दसक असुर हरि घाए ॥

दश दैत्यों को मार दिया।

अधिक प्रपंच दिखाइ सभन कह

सब को छल दिखा कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपहि ब्रहम कहाए ॥१॥

आप ही परमेश्वर कहाया।

भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु

वह प्रभु मारने और जवाने में सम ही है।

सो किम जात गिनायो ॥

भला वह किस प्रकार गिणती में आ सकता है।

तांते सरब काल के असि को

उस सब को मारने वाली तलवार के

घाइ बचाइ न आयो ॥२॥

जखम से स्वयं कोई नहीं बचा।

कैसे तोहि तार है सुन जड़

हे पशु वह किस प्रकार तुझे पार करेगा

आप डुबिओ भव सागर ॥

जो सागर में आपही डूब गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छुटहो काल फास ते तबही

तब ही तुम काल की रस्सी से बचोगे

गहो सरनि जगतागर ॥३॥५॥२६॥

यदि जगत पिता की शरण पकड़ोगे।

ख़िआल पातशाही १० ॥

गुरु जी हरि के ख़्यालों को लेकर कहते हैं।

मित्र पिआरे नूं

प्यारे को जाकर कह देना

हाल मुरीदां दा कहिणा ॥

हमारा मुरीदों का हाल।

तुध बिन रोग रजाईआं दा ओढण

तेरे बिना रजाईयां को लेने वाला रोग है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाग निवासां दे रहिणा ॥

और सांपों पर हम सोए पड़े हैं।

सूल सुराही खंजर पिआला

सुराही का जल शूल और प्याला खंजर है

बिंग कसाईआं दा सहिणा ॥

कसाईयों का टेढ़ा छुरा सहना है।

यारड़े दा सानूं सथर चंगा

हमें तो यारसेमिलकर रहना, धरतीपर सोना मंज़ूर है।

भठ खेड़िआं दा रहिणा ॥१॥६॥३०॥

बिछुड़ कर खेड़ों में रहना तपता तंदूर है।

तिलंग काफी पातशाही १० ॥

केवल कालई करतार ॥

एक अकाल पुरुष संसार का कर्ताहर्ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि अंत अनंत मूरति

उस के आदि का कोई अंत नहीं यह बेअंत है

गड़न भंजन हार॥ १ ॥ रहाउ ॥

उसकी मूर्ति घड़ने और जोड़ने में बलवान् है।

निंद उसतति जौन के सम

निंदा और स्तुति उसे समान है

सत्र मित्र न कोइ॥

उसका मित्र शत्रु कोई नहीं।

कौन बाट परी तिसै

क्या भीड़ आ पड़ी उसे

पथ सारथी रथ होइ ॥ १ ॥

जो वह अर्जुन का रथवाहक आ बना।

तात मात न जात जाकर

उस के माता पिता किसी प्रकार भी नहीं जाने जाते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुत्र पौत्र मुकंद ॥

उस मुक्ति दाते के पुत्र पौत्र भी कोई नहीं।

कउन काज कहाहिगे ते

किस वासते आकर कहाया है

आनि देवकि नंद ॥२॥

वह देवकी का पुत्र।

देव दैत दिसा विसा

जिसने देवते दैत्यों और सब ओर

जिह कीन सरब पसार ॥

सारा पसारा आकर किया है।

कौन उपमा तौन को

मैं उसकी क्या बड़ाई करूँ

मुख लेत नाम मुरारि ॥३॥७॥३१॥

मुख से उस मुरारी का नाम लेकर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रागु बिलावलु पातशाही १० ॥

सो किम मानस रूप कहाए ॥

किस लिए यह मनुष्य रूप कहाया है ।

सिध समाधि साध कर हारे

जिस को सिद्ध समाधीआं साध २ हार गए हैं

कउ हूं न देखन पाए ॥१॥ रहाउ ॥

किसी प्रकार भी वह दीख नहीं पाया है ।

नारद बिआस परासर ध्रूअ से

नारद, व्यास और उसका पिता, ध्रुव जैसे

धिआवत धिआन लगाए ॥

ध्यान लगाकर ध्याते हैं ।

बेद पुरान हार हठ छाडिओ

वेदों पुराणों के रचने वालों ने भी हार कर छोड़ दिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदपि धिआन न आऐ ॥१॥

तब भी ध्यान अन्दर नहीं आता।

दानव देव पिसाच प्रेत ते

दैत्य देवते छोटे बड़े प्रेत भूतों ने

नेतह नेत कहाए ॥

बेअन्त २ करके ध्याया है।

सूछम ते सूछम कर चीने

उन्होंने छोटे से छोटा करके जाना है

बृधन बृध बताए ॥ २ ॥

और बड़ों ने बड़ा करके बताया है।

भूमि अकास पताल सबै सजि

धरती अकाश सब पातालों को बनाकर

एक अनेक सदाए ॥

फिर एक से अनेक कहाया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो नर काल फास ते बाचे

वह मनुष्य काल फांसी से बचता है

जो हरिसरणि सिधाए ॥३॥८॥३२॥

जो हरि की शरण आ जाता है।

रागु देवगंधारी पातशाही १०

इक बिन दूसर सो न चिनार ॥

एक ईश्वर के बिना अन्य किसी को न माने।

भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु

वह तोड़ने और घड़ने को समर्थ है

जानत है करतार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

वह हर बात में समर्थ है।

कहा भइओ जो अति हित चितरक

क्या हुआ जो बहुत मन लगा कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहु विधि सिला पुजाई ॥

बहु विधि से शिला पूजता रहा ।

प्रान थके पाहन कह परसत

पत्थरों को छू २ कर हाथ भी थक गये

कछु कर सिध न आई ॥१॥

फिर भी हाथ में कुछ सिद्धि नहीं आई ।

अछत धूप दीप अरपत है

चावल और धूप दीप ऊपर डालता रहा

पाहन कछू न खै है ॥

परन्तु पत्थर ने तो कुछ भी नहीं खाया ।

ता मे कहा सिध है रे जड़

ओ पशु ! उस में क्या सिद्धि है

तोहि कछु बर दै है ॥२॥

तुझे वह क्या बर देगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जौ जीअ होत तौ देत कछू तुहि

यदि वह जीवित होता तो तुझे कुछ देता भी

मन बच करम बिचार ॥

तूं गधे मन वाणी शरीर करके कुछ विचार तो कर।

केवल एक सरणि स्वामी बिन

एक मालिक की शरण बिना

यौ नहि कतहि उधार ॥३॥६॥२३॥

इस प्रकार कहीं भी उधार नहीं होगा।

राग देवगंधारी पातशाही १० ॥

बिन हरि नाम न बाचन पै है ॥

परमेश्वर के नाम बिना कहीं भी बचाव नहीं।

चौदह लोक जांहि बस कीने

जिस ने चौदह लोकों को वश किया है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताते कहा पलैहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥

उस से कहां भागेगा ?

राम रहीम उबार न सकहै

कोई राम रहीम तुझे बचा नहीं सकेगा

जाकर नाम रटै है ॥

जिन का तू नाम तोते की भांति बोलता है।

ब्रहमा बिशन रुद्र सूरज ससि

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा

ते बसि काल सबै है ॥१॥

यह सब देवते अकाल के वश हैं।

बेद पुरान कुरान सबै मत

यह सब पुस्तकें

जाकर नेत कहै है ॥

जिसे बेअन्त २ कहती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु

इंद्र, सप्त ऋषि और मुनि-चिरकाल तक याद करते रहे

धिआवत धिआन न ऐहै ॥ २ ॥

परन्तु वह ध्यान में नहीं आया है ।

जाकर रूप रंग नहि जनियत

जिस का कुछ रूप रंग नहीं जाना जाता

सो किस स्याम कहै है

वह शाम किस प्रकार कहाया है ।

छुटहो काल जाल ते तबही

ओ गधो ! काल के जाल से तब ही बचोगे

ताहि चरन लपटै है ॥३॥१०॥३४॥

जो उस के चरणों से लिपट जाओगे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ ओं श्री वाहिगुरू जी की फतह

अमृत सवैये

श्री मुखवाक पातशाही १० ॥

स्रावग सुध समूह सिधानके

सरेवड़े सारे शुद्ध रहने वाले सिद्ध और अनेकों

देख फिरिओ घर जोग जतीके ॥

योगियों जतियों के घर में देख फिरा ।

सूर सूरारदन सुध सुधादिक

सूरमे दैत्य साधु और अमृत पीने वाले

संत समूह अनेक मतीके ॥

बहुत संत जो अनेकों मतों के थे ।

सारे ही देस को देख रहिओ मत

मैं सब ही देशों को देख कर फिर आया हूं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोऊ न देखीअत प्रान पती के ॥

मैं प्राण पति के मत वाला कोई नहीं देखा ।

स्री भगवान की भाइ क्रिपा हूं ते

परमेश्वर की प्रेम भक्ति की प्रीत के बिना

एक रती बिन एक रती के ॥१॥

ऊपर कहे सब एक फूटी कौड़ी के समान भी नहीं ।

माते मतंग जरे जर संग

मस्त हाथी जो जग आदिक से जड़े हुए हैं

अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥

और बड़े सुन्दर रंग से ऊंचे २ सजाये हैं।

कोट तुरंग कुरंग से कूदत

करोड़ों घोड़े जो हिरण समान भागते हैं ।

पउन के गउन को जात निवारे ॥

तथा वायु से बातें करते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारी भुजान के भूप भली बिधि
अच्छी रीति और बड़ी २ भुजाओं वाले राजे
निश्रावत सीस न जात बिचारे ॥
जिस को मस्तक झुकाते थे बेअन्त राजे।
एते भए तो कहा भए भूपत
इतने प्रताप वाले राजे हो गए फिर क्या हुआ ?
अंत को नांगे ही पांइ पधारे ॥२॥
अन्त में तो वह नंगे पांव ही गये हैं।
जीत फिरे सभ देस दिसान को
जो देश और सब दिशाओं को जीतते फिरे
बाजत ढोल मृदंग नगारे ॥
और उन संग बड़े २ बाजे बजते थे।
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर
और सुन्दर हाथी संग गूंजते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हंसत ही हय राज हजारे ॥

हज़ारों बड़े घोड़े साथ हिनहिनाते थे ।

भूत भविख भवान के भूपत

उस समय के राजों को

कउन गनै नही जात बिचारे ॥

कौन गिने वह नहीं विचारे जाते ।

स्री पति स्री भगवान भजे बिनु

भगवान को याद किये विना

अंत को अंत के धाम सिधारे ॥३॥

अन्त को वह राजे यम के घर चले गये ।

तीरथ न्हान दइआ दम दान

तीर्थ स्नान दया और इन्द्रियों को रोकने के

सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥

यत्न दान और कई प्रकार के नियम करने ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेद पुरान कतेब कुरान

बेदों पुराणों किताबों कुराणों

जमीन जमान सबान के पेखै ॥

धरती आकाश सब में देखे हैं।

पउन अहार जती जत धार

वायु को खाने वाले जतिजत धारन वाले

सबै सु बिचार हजारक देखै ॥

हजारों सब विचार कर देखे हैं।

स्री भगवान भजे बिन भूपति

ओ राजे ! भगवान् के जपे बिना और

एक रती बिन एक न लेखै ॥४॥

उसकी प्रेम भक्ति बिना एक राजा लेखे नहीं आया।

सुध सिपाह दुरंत दुबाह

अच्छे सिपाही जो दोनों ओर शस्त्र चलाते थे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सु साज सनाह दुरजान दलैंगे ॥
अनेकों संजोओं को सजाकर दुष्टों को मारने वाले थे
भारी गुमान भरे मन मैं
बड़े २ अहंकार में भरे हुये
कर परबत पंख हलै न हलैंगे ॥
पर्वत पंख लगा कर उड़ जायें परन्तु वह नहीं डोलते
तोर अरीन मरोर मवासन
शत्रुओं को तोड़ आकियों को मरोड़ कर
माते मतंगन मान मलैंगे ॥
मस्त हाथियों का अहंकार मलने वाले थे ।
स्री पति स्री भगवान कृपा बिन
परन्तु प्रभु कृपा के बिना वह राजे
तिआग जहान निदान चलैंगे ॥५॥
जगत छोड़ अंत भूखे प्यासे चले गये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बीर अपार बड़े बरिआर

वीर बलवान सूरमे जो नहीं विचारे

अबि चारहि सारकी धार भछया ॥

जाते वह बलि जो लोहे की धारें खा जाते थे।

तोरत देस मलिंद मवासन

देशों को तोड़ शत्रुओं को मरोड़ कर

मातै गजान के मान मलया ॥

मस्त हाथियों का अहंकार तोड़ने वाले थे।

गाड़े गड़ान के तोड़न हार

बड़े २ किलों को तोड़ने वाले थे

सु बातन ही चकचार लवया ॥

बातों २ में ही चारों दिशाओं को लेने वाले थे।

साहिब स्री सब को सिरनाइक

मालक तो सब का शिरोमणि मालक है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाचिक अनेक सु एक दिवया ॥६॥

मांगने वाले अनेकों हैं दाता एक है।

दानव देव फनिंद निसाचर

दैत्य देवते बड़ें सांप रात को घूमने वाले चोर

भूत भविख भवान जपैंगे ॥

तीनों समों में हरि जाप जपेंगे।

जीव जिते जल मै थल मै

जलों थलों में जितने जीव हैं

पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥

वह पल २ में हरि निरंकार का थाप थापेंगे।

पुंन प्रतापन बाढ जैत धनु

पुण्य प्रतापों की बहुत जय २ कार होगी

पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥

बहुत से पापों के समूह नाश होंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साध समूह प्रसंन फिरैं जग

बहुत से संत प्रसन्न फिरेंगे और

सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७॥

शत्रु सब देख २ कर दुःखी होंगे ।

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप

मनुष्य इन्द्र बड़े हाथी और राजे

जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥

जो तीनों लोकों का राज करेंगे ।

कोटि सनान गजादिक दान

स्नान कर करोड़ों हाथी दान करने वाले

अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥

अनेकों स्वयंवरों को सजा स्त्रियां वरने वाले ।

ब्रहम महेसुर बिसन सची पत

ब्रह्मा, विष्णु, शिव और इन्द्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंत फसे जम फास परैंगे ॥

अन्त में यम की फांसी में फंस जायेंगे ।

जे नर स्री पत के प्रस हैं पग

जो मनुष्य भगवान के चरणों को छूयेंगे

ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥

वह फिर शरीर नहीं धारेंगे ।

कहा भयो दोऊ लोचन मुंदकै

क्या हुआ जो दो आंखों को बन्द कर

बैठ रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥

बैठा रहा और बगुले समान ध्यान लगा रखा ।

न्हात फिरिओ लीए सात समुंद्रन

शरीर को उठा कर सात समुद्रों में नहाता फिरा।

लोक गइओ परलोक गवाइओ ॥

लोक और प्रलोक दोनों गंवा लिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बासु कीओ बिखिआन सो बैठकै

वैठ कर विषयों में वास किया

ऐसे ही ऐस सु बैस बिताइओ ॥

इसी प्रकार सारी सुन्दर आयु गवा ली ।

साच कहो सुन लेहु सभै

हे गुरुमुखो सुनों मैं सच कहता हूँ

जिन प्रेमु कीओ तिनही प्रभु पाइओ ॥

जिन्होंने प्रेम किया उन्होंने प्रभु पाया है ।

काहू लै पाहन पूज धरो सिर

किसी ने पत्थर को पूज कर सिर पर रक्खा

काहू लै लिंगु गरे लटकाइओ ॥

किसी ने शिवलिंग को गले लटकाया ।

काहू लखिओ हरि अवाची दिसामहि

किसी ने हरि को पूर्व में देखा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काहू पछाह को सीस निवाइओ ॥

किसी ने पश्चिम में सिर झुकाया।

कोऊ बुतान को पूजत है पसु

कोई पशु बुतों को पूजता फिरा

कोऊ मृतान को पूजन धाइओ ॥

कोई मुरदों को पूजने दौड़ा।

कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जगु

इस झूठे कार्य में लोग फंसे रहे

स्री भगवान को भेदु न पाइओ॥१०॥

भगवान का भेद किसी ने नहीं पाया।

त्व प्रसादि सवैये

दीनन की प्रतिपाल करै नित

ग़रीबों की नित्य पालना कर्ता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संत उबार गनीमन गारै ॥

सन्तों को बचा कर शत्रुओं को मारता है।

पच्छ पसू नग नाग नराधप

जन्तुओं पशुओं और पर्वतों पर रहने वाले हाथिओं

सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥

हर समय सब की पालना करता है।

पोखत है जल मै थल मै पल मै

जल थल में सब को पालता है

कल के नही करम बिचारै ॥

कलियुग के जीवों के काम नहीं विचारता।

दीन दइआल दया निधि दोखन

दया का समुद्र दयाल हमारे दुःखो को

देखत है पर देत न हारै ॥ १ ॥

देखता तो है परन्तु हमें देता नहीं हारता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाहत है दुख दोखन को

दुःख और दोशों को जलाता है

दल दुज्जन के पल मैं दल डारै ॥

शत्रुओं के दल पल में दल देता है ।

खंड अखंड प्रचंड प्रहारन

न मरने वालों को मार तेज प्रतापीयों को परे फैंक

पूरन प्रेम की प्रीत संभारै

प्रेम की पूरी प्रतीत को सम्भालता है ।

पार न पाइ सकै पदमापति

उस का अंत विष्णु हरि नहीं पा सके

बेद कतेब अभेद उचारै

वेद कितेब भी उसे भेद कहते हैं ।

रोजी ही राज बिलोकत राजक

वह दाता हमारी रोज़ी का भेद नित्य देखता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोख रूहान की रोजी न टारै ॥२॥

क्रोधी मनुष्यों की रोजी नहीं हटाता ।

कीट पतंग कुरंग भुजंगम

कीट, पतंग, हिरन, सांप

भूत भविख भवान बनाए ॥

तीनों समयों में बनाये ।

देव अदेव खपे अहंभेव

देखते दैत्य अहंकार में मर गये

न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ॥

इस का भेद किसी ने नहीं पाया भ्रम में फिरते रहे ।

बेद पुरान कतेब कुरान

हिन्दू मुसलमानों की सब पुस्तकें

हसेब थके कर हाथ न आए ॥

हिसाब करके थक गई फिर भी कुछ हाथ नहीं आया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूरन प्रेम प्रभाउ बिना

पूर्ण प्रेम के प्रताप के बिना

पति सिउ किन स्रीपदमापति पाए ॥३॥

किसी ने भगवान को पाया है ।

आदि अनंत अगाध अद्वैख

जो अनन्त आदि का बेअन्त और द्वेष रहित है

सु भूत भविख भवान अभै है ॥

वह तीनों कालों में भय रहित है ।

अंति बिहीन अनातम आप

वह मृत्यु के बिना आत्म भाव जीव रूप है

अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥

कलंक देख रेख बिना है अछेद है ।

लोगन के करता हरता

वह लोक का कर्ता हर्ता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥

वह स्वामी हर जगह अन्दर पालने वाला है ।

दीन दइआल दइआ कर स्री पति

वह दीन दयाल दया करने वाला है

सुंदर स्री पदमापति ए है ॥४॥

इस प्रकार यह प्रभु अति सुन्दर है ।

काम न क्रोध न लोभ न मोह

पांचों विषय और दुःख गया

न रोग न सोग न भोग न भै है ॥

खाने पीने का जिसे कोई भय नहीं है ।

देह बिहीन सनेह सभो तन

वह शरीर रहित सब से प्रेम करने वाला है

नेह बिरकत अगेह अछै है ॥

देह को त्याग देता है घर से अछेद है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जान को देत अजान को देत

अनजानों और जानकारों को देता है

जमीन को देत जमान को दै है ॥

धरती अकाश सब को देता है।

काहे को डोलत है तुमरी सुध

हे जीव तू क्यों डोलता हैं तेरी सुध

सुंदर स्री पदमापति लैहै ॥५॥

सुन्दर प्रभु आकर लेगा।

रोगन ते अर सोगन ते

रोगों सोगों से

जल जोगन ते बहु भांति बचावै ॥

जल जोगणियों से बहुत ढंग से बचाता है।

सत्र अनेक चलावत घांव

शत्रु अनेकों वार करता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तऊ तन एक न लागन पावै ॥

परन्तु शरीर को एक भी नहीं लगता ।

राखत है अपनो कर दै कर

अपना हाथ करके रखता है

पाप संबूह न भेटन पावै ॥

बहुत से पाप छूह भी नहीं सकते ।

और की बात कहा कह तो सो

और की बात मैं तुझे क्या बताऊं

सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥८॥

वह पेट के परदे में भी बचाता है ।

जच्छ भुजंग सु दानव देव

जख, सांप, दैत्य और देवते

अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ॥

वह तुझे, अलख करके याद करते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमि अकास पताल रसातल

धरती अकाश पताल और रसातल

जच्छ भुजंग सभै सिर निआवै ॥

जख और सांप सब सिर झुकाते हैं।

पाइ सकै नही पार प्रभाहू को

परन्तु वह निरंकार की शोभा का अन्त नहीं पासकते

नेत ही नेतह भेद बतावै ॥

वह देवता भी बेअन्त करके बताते हैं।

खोज थके सब ही खुजीआ सुर

सब खोजी और देवते आदि खोज कर थक गये

हारि परे हरि हाथ न आवै ॥७॥

परन्तु हरि हाथ नहीं आया।

नारद से चतुरानन से

नारद, ब्रह्मा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुमना रिखि से सभ हूं मिल गाइओ ॥
सब ऋषि मुनियों ने तुझे मिलकर गाया है।
बेद कतेब न भेद लखिओ
वेद् कितेब ने भेद नहीं पाया
सभ हारि परे हरि हाथि न आइओ ॥
सब हार गये हरि हाथ नहीं आया।
पाइ सकै नही पार उमापत
शिव भी अन्त नहीं पा सका
सिध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥
शिव और ब्रह्मा के पुत्रों ने जपा है।
धिआन धरो तिह को मन मै
तुम भी उस का मन में ध्यान करो
जिहकोअमितोजु सभैजगु छाइओ॥८॥
जिस का प्रताप समस्त संसार में है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेद पुरान कतेब कुरान

दोनों मतों की पुस्तकें

अभेद नृपान सभै पचहारे ॥

सब राजे भेद नहीं पा सके और हार गये ।

भेद न पाइ सकिओ अनभेद को

अभेद का कोई भेद नहीं पा सका

खेदत है अनछेद पुकारे ॥

सब को छेदता है वह अछेद है ।

राग न रूप न रेख न रंग

उस का कोई रूप नहीं न कोई सम्बन्धी है

न साक न सोग न संग तिहारे ॥

न ही उसका कोई साथी है ।

आदि अनादि अगाध अभेख

आदि अनादि और बेअन्त है;

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अद्वैखजपिओ तिनहीकुल तारे ॥६॥

जिस ने जपा उस ने अपनी कुलों को तार लिया।

तीरथ कोट कीए इसनान

करोड़ों तीर्थों के स्नान किये

दीए बहु दान महाब्रति धारे ॥

बड़े दान दिये बड़े व्रत रक्खे।

देस फिरिओ कर भेस तपो धन

देशों में साधुओं का वेष धार फिरा

केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥

जटायें रखने से भी प्यारा नहीं मिला।

आसन कोट करे असटांग

आठ प्रकार के करोड़ों आसन किये

धरे बहु न्यास करे मुख कारे ॥

और बड़े यत्न किये मुंह भी काले किये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीन दइआल अकाल भजे बिनु

परन्तु दीनदयाल दैत्य भजे विना

अंत को अंत के धाम सिधारे ॥१०॥

अन्त को जम के धाम सिधार गये ।

अनंदु

रामकली महला ३ ॥

ੴ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए

हे मेरी माता मुझे बड़ा आनन्द हुआ है

सतिगुरू मै पाइआ ॥

क्योंकि मैं सतिगुरोंको प्राप्त कर लिया है ।

सतिगुरू त पाइआ सहज सेती

सहज ही गुरु प्राप्त कर लिया है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनि वजीआ वाधाईआ ॥

मन में बड़ी खुशियां हुई हैं ।

राग रतन परवार परीआ

राग रत्न परिवार और स्त्रियां भी

सबद गावण आईआ ॥

गुरु के शब्द गाने आई हैं ।

सबदो त गावहु हरी केरा

सो हरि गुरु के शब्दों को ही गाओ

मनि जिनी वसाइआ ॥

जिस करके मुझे वस आता है ।

कहै नानकु अनंदु होआ

गुरु जी कहते हैं बड़ा आनन्द हुआ है

सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥

जो मैं गुरु को पा लिया है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥

हे मेरे मन तू सदा गुरु संग रह

हरि नालि रहु तूं मंन मेरे

हे मेरे मन तू सदा गुरु के साथ रह

दूख सभि विसारणा ॥

जो गुरु सब दुःखों के नाश करने वाला है।

अंगीकारु ओहु करे तेरा

साथ ही वह तेरा पक्ष करने वाला भी है

कारज सभि सवारणा ॥

और काम भी सब बनाने वाला है।

सभना गला समरथु सुआमी

फिर वह हर बात को समर्थ है

सो किउ मनहु विसारे ॥

फिर ऐसे स्वामी को क्यों भुलायें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहै नानकु मंन मेरे

गुरु जी कहते हैं हे मेरे मन

सदा रहु हरि नाले ॥२॥

तू सदा ही प्रभु के संग रह।

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥

हे सच्चे साहिबा तेरे घर में क्या नहीं है।

घरि त तेरै सभु किछु है

तेरे घर में तो सब कुछ है

जिसु देहि सु पावए ॥

परन्तु जिसे तू देता है उसे ही सब कुछ मिलता है।

सदा सिफति सलाह तेरी

तेरी सदा बड़ाई करें

नामु मनि वसावए ॥

तो तब मन वस में आवेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नामु जिनकै मनि वसिआ

जिन के मन मालिक का नाम वसा है

वाजे सबद घनेरे ॥

उन के घर अनेक खुशी के बाजे बजते हैं।

कहै नानकु सचे साहिब

सच्चे मालिका

किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

तेरे घर क्या नहीं है।

साचा नामु मेरा आधारो ॥

मेरा आसरा सच्चा नाम है।

साचु नामु अधारु मेरा

सच्चा नाम ही मेरा आसरा है

जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥

जिस ने सब भूखें नाश कर दी हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करि सांति सुख मनि आइ वसिआ

शांति की है मन में सुख आ बसा है

जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥

जिस नाम ने सब इछायें पूरी की हैं।

सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु

उस पर सदा बलिहार हूँ

जिस दीआ ऐहि वडिआईआ ॥

जिस गुरु की यह शोभा है।

कहै नानकु सुणहु संतहु

हे संतो सुनो !

सबदि धरहु पिआरो ॥

सच्चे शब्द से प्यार करो।

साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

सचा नाम ही मेरा आधार है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाजे ❀ पंच सबद तितु घरि सभागै ॥

उस भाग्यवान घर में उत्तम बाजे बजते हैं ।

❀(१) तंती—सितार, तंबूरा ।

(२) वित—ढोल, तबला आदि ।

(३) घन—कांसी के छैने कैंसियां ।

(४) नाद—घड़ा, गागर आदि की ध्वनि ।

(५) सुभर—बांसुरी आदि ।

गुरु जी कहते हैं कि इन पांच प्रकार के बाजों का आनन्द वाहिगुरु के प्रेमियों को प्राप्त होता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घरि सभागै सबद वाजे

जिन के मन में शब्द बजें वही सुभाग्य हैं

कला जितु घरि धारीआ ॥

जिस घर में स्वामी की शक्ति है।

पंच दूत तुधु वसि कीते

हे प्रभु तूने पांचों शत्रु वस किये हैं

कालु कंटकु मारिआ ॥

और काल रूपी कांटे को मार दिया है।

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ

जिन को आदि से बखशिश का लेख

सि नामि हरि कै लागे ॥

लिख दिया है वह नाम में लगे हैं।

कहै नानकु तह सुखु होआ

उन्हें ही सुख हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

और उसी घर अनहद नाद बजते हैं।

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥

सच्चे प्रेम बिना यह शरीर व्यर्थ है।

देह निमाणी लिवै बाझहु

यह शरीर प्रेम बिना दुखी है

किआ करे वेचारीआ ॥

यह शरीर बेचारा क्या करे।

तुधु बाझु समरथ कोइ नाही

तेरे बिना और कोई समर्थ नहीं है

क्रिपा करि बनवारीआ ॥

हे बनवारी कृपा कर।

एस नउ होरु थाउ नाही

इस शरीर को और कोई स्थान नहीं है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबदि लागि सवारीआ ॥
यह शब्द से लगा कर ही संवारी जाती है।
कहै नानकु लिवै बाझहु
गुरु जी कहते हैं प्रेम के बिना
किआ करे वेचारीआ ॥६॥
यह शरीर बेचारा क्या कर सकता है।
आनंदु आनंदु सब को कहै
सब कहते हैं किसी को बड़ा आनन्द है
आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
परन्तु वास्तव में यह आनन्द गुरु से जाना जाता है।
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते
गुरु से आनन्द जाना जाता है
कृपा करे पिआरिआ ॥
जे प्यारा कृपा करे तो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करि किरपा किल विख कटे

कृपा करके पापों को काट देवे

गिआन अंजनु सारिआ ॥

और ज्ञान का सुरमा आंखों में डाल देवे।

अंदरहु जिनका मोहु तुटा

जिन का अन्दर से मोह टूट गया है

तिनका सबदु सचै सवारिआ ॥

उन का उधार सच्चे गुरु ने कर दिया है।

कहै नानकु एहु अनंदु है

गुरु जी कहते हैं यही सच्चा आनन्द है

आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥

यह आनन्द हम गुरुओं से समझा है।

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥

जिसे तू देता है वह आनन्द को पाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पावै त सो जनु देहि जिसनो

निश्चय वही पाता है जिसे तू आप देवे

होरि किआ करहि वेचारिआ ॥

और कोई बेचारा क्या कर सकता है।

इकि भरमि भूले फिरहि दहदिसि

कई भ्रम में भूले हुए दशों दिशाओं में फिरते हैं

इकि नामि लागि सवारिआ ॥

कईयों ने नाम संग लग अपना आप सुधार लिया है

गुरपरसादी मनु भइआ निरमलु

गुरु कृपा से उनका मन साफ़ हो गया है

जिना भाणा भावए ॥

जिन को भाणा अच्छा लगा है।

कहै नानकु जिसु देहि पिआरे

गुरु जी कहते हैं जिसे तू देवे हे प्यारे!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोई जनु पावए ॥८॥

वही पुरुष पा सकता है।

आवहु संत पिआरिहो

हे मेरे प्यारे सन्तो !

अकथ की करह कहाणी ॥

जो अकथ है उस की कहानी कहें।

करहा कहाणी अकथ केरी

और उस अकथ प्रभु की कथा करें

कितु दुआरै पाईऐ ॥

उस स्वामी को किस यत्न से ढूंडें।

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ

हां तन मन धन सब उस के अर्पण कर देवें

हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥

और आज्ञा मानने में सुख की प्राप्ती होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुकमु मंनिहु गुरू केरा

गुरु का हुकम मानो

गावहु सची बाणी ॥

और सच्ची वाणी गाओ।

कहै नानकु सुणहु संतहु

गुरु जी कहते हैं हे सन्त जनों सुनो!

कथिहु अकथ कहाणी ॥६॥

उस अकथ वाहिगुरु की कथा करो।

एमन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥

हे मेरे मन चतुराई से प्रभु किसे नहीं मिला।

चतुराई न पाइआ किनै

चालाकी से उसे किसे नहीं पाया

तू सुणि मंन मेरिआ ॥

हे मेरे मन तू भली प्रकार कानों से सुन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एह माइआ मोहणी

यह माया मोहनी है

जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥

जिस ने इस भ्रम का परदा पा लिया है।

माइआ त मोहणी तिनै कीती

उस ने माया मोहनी की है

जिनि ठगउली पाईआ ॥

जिसने ठग बूटी पाई है।

कुरबाणु कीता तिसै विटहु

उस पर कुर्बान हूं

जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥

जिस ने मीठा मोह ला दिया है।

कहै नानकु मन चंचल

गुरु जी कहते हैं हे चंचल मन !

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥

प्रभु को चतुराई से किसी ने नहीं पाया ।

ए मन पिआरिआ तू सदासचु समाले॥

हे मेरे मन तू सदा सच को याद रख।

एहु कुटुंबु तू जि देखदा

यह जो परिवार तू देखता है

चलै नाही तेरै नाले ॥

यह तेरे साथ नहीं जायेगा।

साथि तेरै चलै नाही

जब इन्होंने तेरे साथ नहीं जाना

तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥

फिर इस के साथ क्यों प्रेम करता हैं :

ऐसा कंमु मूले न कीचै

इस प्रकार का काम कभी नहीं करना चाहिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितु अंति पछोताईऐ ॥

जिस करके अन्त को पछतायें।

सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू

तू गुरु का उपदेश सुन

होवै तेरै नाले ॥

जो सदा तेरे साथ सहाई होगा।

कहै नानकु मन पिआरे

गुरु जी कहते हैं हे प्यारे मन

तू सदा सचु समाले ॥११॥

तू सदा उस सच्चे को याद रख।

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥

हे बड़े स्वामी तेरा अंत किसी ने नहीं पाया।

अंतो न पाइआ किनै तेरा

अन्त तो तेरा किसे भी नहीं पाया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपणा आपु तू जानहे ॥

तू अपना आप ही जानता हैं।

जीअ जंत सभि खेलु तेरा

यह जीव जन्तु सब तेरा खेल है

किआ को आखि वखाणए ॥

इसे और कोई क्या कह सकता है।

आखहि त वेखहि सभु तू है

सब कुछ कहने सुनने वाला तू आप हैं

जिनि जगतु उपाइआ ॥

जिस ने जगत पैदा किया है।

कहै नानकु तू सदा अगंमु है

(गु०बा०) तू सदा मन वाणी से परे हैं

तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥

तेरा अन्त कोई भी नहीं पा सकता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुरिनर मुनिजन अंमृतु खोजदे

जिसे देवते, पुरुष, मुनि खोजते हैं

सु अंमृतु गुर ते पाइआ ॥

वह अमृत मैं गुरु से पाया है ।

पाइआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी

गुरु ने कृपा की है

सचा मनि वसाइआ ॥

तो इस प्रकार सचापन मन में वसा है ।

जीअ जंत सभि तुधु उपाए

सारे जीव जन्तु तूने पैदा किये हैं

इकि वेखि परसणि आइआ ॥

एक तेरा दर्शन करने को आये हैं ।

लबु लोभु अहंकारु चूका

उनका लोभ अहंकार दूर हो गया है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतिगुरू भला भाइआ ॥

किन को गुरु अच्छा लगा है।

कहै नानकु जिसनो आपि तुठा

गुरु जी कहते हैं जिस पर वह आप प्रसन्न है

तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ ॥१३॥

उन्होंने नाम रूपी अमृत गुरुओं से पाया है।

भगता की चाल निराली ॥

भक्तों की रहु रीति जगत से भिन्न है।

चाला निराली भगताह केरी

भक्तों की चाल निराली है

बिखम मारगि चलणा ॥

भक्तों का मार्ग कठिन है।

लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना

लोभ मोह अहंकार छोड़ कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुतु नाही बोलणा ॥
वह अधिक बोलते भी नहीं हैं।
खंनिअहु तिखी वालहु निकी
जो खण्डे से तेज़ और तलवार से पतली है
एतु मारगि जाणा ॥
इस मार्ग की डण्डी पर वह चलते हैं।
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ
गुरु कृपा से जिन्होंने अहंकार को त्यागा है
हरि वासना समाणी ॥
उन के अन्दर परमात्मा की वासना है।
कहै नानकु चाल भगता
गुरु जी कहते हैं भक्तों की चाल
जुगहु जुगु निराली ॥१४॥
युगों २ से पृथक चली आई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी

हे स्वामी जैसे चलाते हो तैसे मैं चलता हूँ

होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥

और मैं तेरे क्या गुण कहूँ ।

जिव तू चलाइहि तिवै चलह

जैसे तुम चलाते हो तैसे मैं चलता हूँ

जिना मारगि पावहे ॥

जिन्हें स्वामी का मार्ग अच्छा लगता है ।

करि किरपा जिन नामि लाइहि

कृपा करके जिन्हें अपने नाम में लाता है

सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥

वह सदा हरि को याद करते रहते हैं ।

जिसनो कथा सुणाइहि आपणी

जिस को आपनी कथा सुनाता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सि गुर दुआरै सुखु पावहे ॥

गुरु की दया से सुख पाता है।

कहै नानकु सचे साहिब

हे सच्चे स्वामी

जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥

जैसे तुम चलाते हो वैसे चलते हैं।

एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥

इस गुरु शब्द का यश करना अच्छा है।

सबदो सुहावा सदा सोहिला

यह गुरु शब्द यश

सतिगुरू सुणाइआ ॥

गुरु ने सुनाया है।

एहु तिनकै मंनि वसिआ

यह उन के मन में बसा है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥

जिन्होंने पीछे से लिखा पाया है।

इकि फिरहि घनेरे करहि गला

एक बड़ी बातें करते फिरते हैं

गली किनै न पाइआ ॥

उन्हें इस प्रकार नहीं मिला।

कहै नानकु सबदु सोहिला

गुरु जी कहते हैं कि ब्रह्म का गीत

सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥

संसार को सतगुरु जी ने ही सुनाया है।

पवितु होएसेजना जिनीहरिधिआइआ॥

जिन्होंने हरि को याद किया वह पवित्र हो गये।

हरि धिआइआ पवितु होए

वह उस वाहिगुरु को जप कर पवित्र हो गये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥

जिन्होंने गुरु द्वारा स्वामी को याद किया है।

पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ

परिवार समेत माता पिता भी पवित्र हो गये

पवितु संगति सबाईआ ॥

तथा सब संगत भी पवित्र हो गई।

कहदे पवितु सुणदे पवितु

कहने सुनने वाले पवित्र हो गये

से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥

जिन्होंने मन में वसाया है।

कहै नानकु से पवितु

गुरु नानक जी कहते हैं वह ही पवित्र हैं

जिनीगुरमुखि हरिहरि धिआइआ॥ ३७॥

जिन्होंने मुख द्वारा उसे जपा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करमी सहजु न ऊपजै

तप आदि कामों से ज्ञान नहीं होता

विणु सहजै सहसा न जाइ ॥

और ज्ञान बिना मन का सन्देह नहीं मिटता।

नह जाइ सहसा कितै संजमि

किसी भी यत्न से सन्देह नहीं जाता

रहे करम कमाए ॥

बहुत लोग कर्म कर रहे हैं।

सहसै जीउ मलीणु है

संशयों में जीव बहुत मैला हो जाता है

कितु संजमि धोता जाए ॥

फिर बताओ मन कैसे धोयें।

मंनु धोवहु सबदि लागहु

गुरु शब्द संग मन को धोयें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥

फिर परमेश्वर संग मन लगा छोड़ो।

कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै

गुरु कृपा से ज्ञान प्रकट होता है

इह सहसा इव जाइ ॥१८॥

फिर इस प्रकार सन्देह चला जाता है।

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥

जो मनुष्य मन से मैले बाहर से सफ़ैद हैं।

बाहरहु निरमल जीअहु त मैले

इस प्रकार बाहर से सफ़ैद और अंदर से मैले हैं

तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥

उन्होंने सारा जन्म जूए में हार दिया है।

एह तिसना वडा रोगु लगा

यह तृष्णा बड़ा रोग लगा हुआ है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मरणु मनहु विसारिआ ॥

इस जीव ने मरना मन से भुला ही दिया है।

वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही

वेदों में जो उत्तम नाम है वह सुनता ही नहीं

फिरहि जिउ बेतालिआ ॥

और प्रेतों की भांति भ्रमण करता है।

कहै नानकु जिनसचु तजिआ कूड़े लागे

जो सत्य छोड़ झूठ में लग गये हैं

तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१६॥

उन्होंने जन्म जूये में हार दिया है।

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥

जो गुरुमुख अन्दर बाहर से साफ़ हैं।

बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल

जो ठीक अन्दर और बाहर से साफ़ हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतिगुर ते करणी कमाणी ॥

यह उच्च कर्म सत् गुरुओं से कमाया है।

कूड़ की सोइ पहुचै नाही

वहां झूठ की छू नहीं पहुँचती

मनसा सचि समाणी ॥

उन की वासना सच साथ मिल गई है।

जनमु रतनु जिनी खटिआ

जिन्होंने जन्म रत्न का लाभ कमा लिया है

भले से वणजारे ॥

वह सच के सौदागर अच्छे हैं।

कहै नानकु जिन मंनु निरमलु

जिन का मन साफ़ है

सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥

वह गुरु के साथ हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥

जो कोई सिख गुरु के सामने हो।

होवै त सनमुखु सिखु कोई

ठीक यदि कोई सिख गुरु के सम्मुख हो

जीअहु रहै गुर नाले ॥

परन्तु वह मन से गुरु सम्मुख आज्ञाकारी हो।

गुर के चरन हिरदै धिआए

गुरु चरणों को हृदय से याद रक्खो

अंतर आतमै समाले ॥

और आत्मा अन्दर गुरु चरणों को सम्भाल रक्खो।

आपु छडि सदा रहै परणै

अहंकार त्याग गुरु के आसरे रहो

गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥

गुरु के बिना और किसी को न जानो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहै नानकु सुणहु संतहु

गुरुजी कहते हैं हे सन्तो ! सुनो

सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥

वह सिख गुरु के सम्मुख होता है ।

जे को गुर ते वेमुखु होवै

और जो गुरु से विमुख होता है

बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥

वह गुरु बिना मुक्ति नहीं पा सकता ।

पावै मुकति न होरथै कोई

और कहीं भी उसे सुख नहीं मिलेगा

पुछहु बिबेकीआ जाए ॥

तुम जाकर विचारवानों से पूछ लो ।

अनेक जूनी भरमि आवै

चाहे अनेक योनियों में फिरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥

गुरु बिना सुख नहीं पायेगा।

फिरि मुकति पाए लागि चरणी

गुरु के चरणों में लग मुक्ति पायेगा

सतिगुरू सबदु सुणाए ॥

जब गुरु शब्द सुनायेंगे।

कहै नानकु वीचारि देखहु

आप विचार कर देखो

विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥

गुरु बिना सुख नहीं मिलेगा।

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो

हे गुरु के प्यारे सिक्खो ! आओ

गावहु सची बाणी ॥

सच्ची वाणी गाओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाणी त गावहु गुरू केरी

वाणी गाओ तो उस सत्गुरु की ही गाओ

बाणीआ सिरि बाणी ॥

वह सत्य वाणी सब वाणियों की शिरोमणी है।

जिन कउ नदरि करमु होवै

जिन पर हरि की कृपा है

हिरदै तिना समाणी ॥

उनके हृदय में टिकी है।

पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि

अमृत पीओ और हरि के प्रेम में लगे रहो

जपिहु सारिग पाणी ॥

प्रभु को जपते रहो।

कहै नानकु सदा गावहु

(गु० ग्रा०) हर समय (वाणी) गाओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एह सची बाणी ॥२३॥

इस सच्ची वाणी को।

सतिगुरू बिना होर कचीं है बाणी ॥

गुरु वाणी के बिना सब वाणी कची है।

बाणी त कची सतिगुरू बाझहु

ठीक गुरु वाणी बिना सब वाणी कची है

होर कची बाणी ॥

और सब वाणियां कची हैं।

कहदे कचे सुणदे कचे

कहने सुनने वाले सब कच्चे हैं

कचीं आखि वखाणी ॥

और वाणी भी वह मुंह से कची कहते हैं।

हरि हरि नित करहि रसना

जो नित्य रसना से हरिहर जपते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहिआ कछु न जाणी ॥

कुछ नहीं कहा जाता ।

चितु जिन का हिरि लइआ माइआ

जिन का मन माया ने चुरा लिया है

बोलनि पए रवाणी ॥

वह प्रत्येक बात व्यर्थ बोलते हैं ।

कहै नानकु सतिगुरू बाझहु

गुरु जी कहते हैं सतगुरों के बिना

होर कची बाणी ॥२४॥

और सब कच्ची वाणी है ।

गुर का सबदु रतंनु है

गुरु का शब्द रत्न है

हीरे जितु जड़ाउ ॥

जिस में हीरे जड़े हुए हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबदु रतनु जितु मंनु लागा

गुरु शब्द रत्न में जिस का मन लगा है

एहु होआ समाउ ॥

उन का यह मनोर्थ पूर्ण हो गया है।

सबद सेती मनु मिलिआ

उन का मन शब्द संग मिल गया है

सचै लाइआ भाउ ॥

सच्चे को उन्होंने प्रेम लगाया है।

आपे हीरा रतनु आपे

स्वयं हीरा है स्वयं रत्न है

जिसनो देइ बुझाइ ॥

जिसे यह समझा देता है।

कहै नानकु सबदु रतनु है

गुरु जी कहते हैं शब्द रत्न समान है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥

शुभ गुणों रूपी रत्न जड़े हुए हैं।

सिव सकति आपि उपाइ कै

कर्ता अपनी शक्ति उन्हें उत्पन्न करता है

करता आपे हुकमु वरताए ॥

स्वयं ही उन पर हुकम चलाता है।

हुकमु वरताए आपि वेखै

आज्ञा कर आप ही देखता है

गुरमुखि किसै बुझाए ॥

यह किसी गुरुमुख को समझा देता है।

तोड़े बंधन होवै मुकतु

वह बन्धन तोड़ मुक्त हो जाता है

सबदु मंनि वसाए ॥

जो शब्द को मन में बसाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै

जिसे गुरुमुख कर्ता है वही होता है

एकस सिउ लिवलाए ॥

वह एक से प्रीती लगाता है।

कहै नानकु आपि करता

गुरु जी उच्चारते हैं वह स्वयं कर्ता है

आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥

माया को स्वयं आज्ञा देता है।

सिमृति सासत्र पुंन पाप बीचारदे

स्मृति शास्त्र पुण्य पाप ही विचारते हैं

ततै सार न जाणी ॥

असल बात की इन्हों को खबर नहीं।

ततै सार न जाणी गुरू बाझहु

गुरु बिना यह असल बात को जान ही नहीं सकते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततै सार न जाणी ॥

तत्व का सार किसे ने नहीं जाना ।

तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता

तीन गुणों वाला संसार में सोया पड़ा है

सुतिआ रैणि विहाणी ॥

सोये पड़े ही सारी आयु बीत गई ।

गुर किरपा ते से जन जागे

गुरु कृपा से वह मनुष्य जागे हैं

जिना हरि मनि वसिआ

जिन का मन वस में आया है

बोलहि अंमृत बाणी ॥

और वह मीठी वाणी बोलते हैं ।

कहै नानकु सो ततु पाए

वह ही तत्व वस्तु को खोजता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै

जिसे दिन रात प्रभु अपनी भक्ति में लगाता है

जागत रैणि विहाणी ॥२७॥

उनकी सारी रात जागते बीत गई है ।

माता के उदर महि प्रतिपाल करे

जो माता के पेट में पालना करता है

सो किउ मनहु विसारीऐ ॥

उस परमेश्वर को क्यों भुलावें ।

मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता

वह इतना बड़ा दाता

जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥

जो माता के पेट में खाने को देता है ।

ओस नो किहु पोहि न सकी

उसे किसी प्रकार छू नहीं सकते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसनउ आपणी लिव लावए ॥

जिसे अपनी प्रीति लगाता है।

आपणी लिव आपे लाए

वह अपनी प्रीति आप उसे

गुरमुखि सदा समालीऐ ॥

गुरु कृपा से सम्भालता है।

कहै नानकु एवडु दाता

गुरु जी कहते हैं इतने बड़े दातार को

सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥

उसे मन से क्यों भुलायें।

जैसी अगनि उदर महि

जैसे माता के पेट में अग्नि है

तैसी बाहरि माइआ ॥

उसी प्रकार बाहर माया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माइआ अगनि सभ इको जेही

माया और आग सब एक समान है

करतै खेलु रचाइआ ॥

यह कर्ता ने खेल रचा हुआ है।

जा तिसु भाणा ता जंमिआ

जब उसे भाता है जीव जन्मता है

परवारि भला भाइआ ॥

सब परिवार को अच्छा लगता है।

लिव छुड़की लगी तृसना

तब प्रभु की भक्ति छूट तृष्णा लगती है

माइआ अमरु वरताइआ ॥

यह माया ने आज्ञा की हुई है।

एह माइआ जितु हरि विसरै

यही माया है जो प्रभु भूल जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥

और मोह उत्पन्न होता है।

कहैनानकु गुरपरसादी जिना लिवलागी

गुरु कृपा से जिन की प्रीति लगती है

तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२६॥

उन्होंने संसार में ही परमात्मा को पा लिया है।

हरि आपि अमुलकु है

मालिक स्वयं अमोलक है

मुलि न पाइआ जाइ ॥

उसका मूल्य नहीं पाया जाता।

मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु

परमेश्वर का मूल्य किसी से नहीं पाया जाता

रहे लोक विललाइ ॥

बहुत लोग रोते फिरते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसा सतिगुरु जे मिलै

इस प्रकार का उत्तम गुरु जिसे मिल जाये

तिसनो सिरु सउपीऐ

तो जीव उस को सिर दे देवे

विचहु आपु जाइ ॥

और अहंकार त्याग देवे।

जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै

फिर जिस का जी है उस के साथ मिल जाये

हरि वसै मनि आइ ॥

और परमेश्वर आकर उस में मिल जाये।

हरि आपि अमुलकु है

वह हरि आप अमूल्य है

भाग तिना के नानका

उन के ही भाग्य अच्छे हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन हरि पल्लै पाइ ॥३०॥

जिन के पल्ले में प्रभु आ पड़ता है।

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥

परमेश्वर मेरी पूंजी और मन बणजारा है।

हरि रासि मेरी मनु वणजारा

परमेश्वर मेरी पूंजी और मन वणजारा है

सतिगुर ते रासि जाणी ॥

यह पूंजी गुरु से जानी जाती है।

हरि हरि नित जपिहु जीअहु

जो मन से हरि २ जपते हैं

लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥

वह दिन में लाभ प्राप्त करते हैं।

एहु धनु तिना मिलिआ

यह हरि-धन उन्हें मिलता है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन हरि आपे भाणा ॥

जिन्हें हरि आप ही अच्छा लगता है।

कहै नानकु हरि रासि मेरी

मेरी पूंजी प्रभु का नाम ही है

मनु होआ वणजारा ॥३१॥

और मेरा मन वणजारा बना है।

ए रसना तू अनरसि राचि रही

हे रसना तू स्वादों में लगी हुई है

तेरी पिआस न जाइ ॥

इस प्रकार तेरी प्यास नहीं जायगी।

पिआस न जाइ होरतु कितै

प्यास तेरी और किसी प्रकार नहीं जायगी

जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥

जब तक हरि का नाम तेरे पल्ले नहीं पड़ेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु

हरि रस पल्ले पड़ जाये हरि रस आप पीवे

बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥

फिर उसे संसार की तृष्णा नहीं सताती ।

एहु हरि रसु करमी पाईऐ

यह हरि रस कृपा से पाया जाता है

सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥

जिसे गुरु आ कर मिलते हैं ।

कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे

और सब स्वाद भूल जाते हैं

जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥

जब हरि रस मन में वास करता है ।

एसरीरामेरिआ हरि तुम महि जोतिरखी

हे शरीर तेरे में प्रभु की ज्योति है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ता तू जग महि आइआ ॥

तब तू संसार में आया हैं ।

हरि जोति रखी तुधु विचि

हरि ने तेरे में ज्योति रखी है

ता तू जग महि आइआ ॥

तब तू संसार में आया हैं ।

हरि आपे माता आपे पिता

हरि आप ही माता पिता है

जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥

जिस ने संसार उत्पन्न किया है ।

गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ

यह तमाशा गुरु कृपा से समझा जाता है

चलतु नदरी आइआ ॥

और तमाशा ही दीख पड़ा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ

यह जगत का मूल रचा है

जोति राखी ता तू जग महि आइआ ३ ३

ज्योति रक्खी और संसार में आया ।

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ॥

जब स्वामी का आना सुना तो बड़ा चाव चढ़ा

हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ

घर मन मंदिर में आनन्द हुआ है सखियो मंगल गाओ

हरि गाउ मंगलु नित सखीए

हे सखियो खुशियों के गीत गाओ

सोगु दूखु न विआपए ॥

फिर शोक दुःख निकट नहीं आयेगा ।

गुर चरन लागे दिन सभागे

जब गुरु चरणों में लगेगा वह दिन उत्तम होगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपणा पिरु जापए ॥

जब अपना स्वामी जपा जायेगा ।

अनहत बाणी गुर सबदि जाणी

अनहद शब्द गुरु शब्द से जाना जाता है

हरिनामु हरि रसु भोगो ॥

नाम का रस लेगा ।

कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ

निरंकार स्वयं आ मिलेगा

करण कारण जोगो ॥३४॥

जो करण कारण योग्य है ।

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि

हे मेरे शरीर तू इस जगत में

आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥

आकर क्या काम किया है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि करम कमाइआ तुधु सरीरा

बता क्या कर्म कमाये, हे मेरे शरीर !

जा तू जग महि आइआ ॥

जब से तू इस संसार में आया हैं।

जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ

जिस हरि ने तुझे रचा हैं

सो हरि मनि न वसाइआ ॥

सो उस हरि को मन में नहीं बसाया।

गुर परसादी हरि मंनि वसिआ

गुरु कृपा से मन में हरि आ बसा है

पूरबि लिखिआ पाइआ ॥

यह पहले से लिखा पाया है।

कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ

यह शरीर प्रवान हो गया है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh